

Україна альпона
Український візерунок
антологія поезії з берегів Дніпра
мовою бенгалі
переклад та упорядкування
Мрідული Гош



উক্রাইনা-আলপনা

দ্বীপার নদীর তীরের কবিতা

ভাবানুবাদ ও সংকলন

ড: মৃদুলা ঘোষ

Україна альпона
Український візерунок
*антологія поезії з берегів Дніпра
мовою бенгалі*

переклад та упорядкування
Мрідули Гош

উক্রাইনা-আলপনা

দ্বীপার নদীর তীরের কবিতা

ভাবানুবাদ ও সংকলন

ড: মৃদুলা ঘোষ

Київ-Кольката

কিয়েভ-কলকাতা

2011 - ২০১১

ISBN 978-966-8439-24-7

Published in Ukraine by:

VSESVIT Publishing House Ltd. 34/1, Hrushevskiy Street, Kyiv
01021 Ukraine www.vsesvit-journal.com

Chief Editor: Dr. Yuriy Mykytenko

e-mail: myk@vsessvit-review.kiev.ua

Published and printed in India by:

SASADHAR PRAKASHANI, 10/2B Ramanath Majumder
Street, Kolkata - 700 009, West Bengal, India

Contact: Mr. Amiya Banerjee

Telephone: +91-33-24551514, +91-9830701819

ভারতে প্রকাশন ও মুদ্রণ - শশধর প্রকাশনী,

১০/২ বি, রমানাথ মজুমদার স্ট্রিট, কলকাতা ৭০০ ০০৯

শ্রী অমিয় বন্দ্যোপাধ্যায়, দূরভাষ ৯১-৩৩-২৪৫৫১৫১৪, ৯১-৯৮৩০৭০১৮১৯

This publication was made possible with support from the Tagore
Center, a project of the East European Development Institute,
Kyiv, Ukraine. www.eedi.org.ua e-mail: info@eedi.org.ua

*Front cover: painting "Summer rolls away", 2007, by honored painter of
Ukraine Yuriy Kamyshnyi*

Back cover: photo of poet Dmytro Pavlychko with Dr. Mridula Ghosh

Marketing & Distribution: Vichitta, Kolkata, India

e-mail: vichitta@yahoo.com tel: +91-9836126163

*No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system, or
transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying,
recording and/or otherwise without the prior permission of the copyright holder
and publishers.*

All rights reserved.

© VSESVIT Publishing House, Kyiv, Ukraine 2011

© Sasadhar Prakashani, Kolkata, India, 2011

© Translation into Bengali, editing, compilation, Mridula Ghosh, 2011

© Design & Layout, East European Development Institute, 2011

**Світлій пам'яті моїх батьків,
які не встигли побачити це видання, але
були першими читачами частини рукопису,
Проф. (Др.) Ч. Р. Гош та п. Белі Гош
присвячується**

আমার প্রিয় 'বাপী' ও 'মাম',
পাণ্ডুলিপির অংশের প্রথম দুই পাঠক,
যাঁরা এই প্রকাশনের সময় আর নেই,
অধ্যাপক (ডা:) চিত্তরঞ্জন ঘোষ
ও শ্রীমতী বেলা ঘোষের
স্মৃতির উদ্দেশ্যে

To the fond memory of
my beloved parents,
first readers of the manuscript,
Prof. (Dr.) C. R. Ghosh &
Mrs. Bela Ghosh,
who did not live to see this publication

Передмова

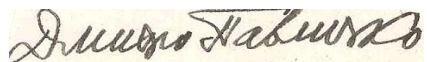
Переді мною зміст першої антології української поезії бенгальською мовою. Вибір імен і творів, а також переклад з оригіналу належать науковцю Мрідулі Гош, громадянці Індії родом з Бенгалії, що досконало володіє українською мовою і працює в Києві.

В Україні неповторна, тисячолітня, національно й духовно багатолика поетична культура Індії добре znana завдяки універсалізму Івана Франка та численним українським перекладачам літературних творів з різних мов Індії. А в Індії до української літератури досі серйозних зацікавлень не було, бо не було української держави. Індійська література також не було широко відомою у світі за часів бездержавності колоніального становища індійського народу.

Мрідула Гош глибоко ознайоmlена з патріотичною державотворчою місією української поезії. Вона розпочинає великого значення для незалежної України діло – вперше відкриває індійському читачеві поетичний феномен української нації.

Антологія „Україна-альпона”, тобто „Український візерунок” як початкова поява української нації в Індії, заслуговує найвищого схвалення. Тут присутні не всі найважливіші імена й твори нашого поетичного саду, адже це тільки початок знайомства, але тут немає нічого другорядного, зайвого. Належить дуже високо оцінити вибір творів, намір уникнути повторень, показати багатство філософських, ліричних мотивів, акцентувати на тому, що має здатність відкривати загальнолюдські прикметності українського поетичного духу.

Щастям для цієї антології є те, що вона вийде у ювілейний, 150-ий від дня народження Великого Рабіндраната Тагора рік.



Дмитро Павличко

4 січня 2011 року
Київ

ভূমিকা

আমার হাতে বাংলা ভাষায় ইউক্রেনীয় কবিতার প্রথম সংকলনের সূচীপত্র। কবি ও কবিতার চয়ন এবং মূল ভাষা থেকে অনুবাদ করেছেন বিদূষিনী, কিয়েভে কর্মরতা ভারতীয়া বাঙালী শ্রীমতী মৃদুলা ঘোষ, যাঁর ইউক্রেনীয় ভাষায় বিশেষ দক্ষতা ও জ্ঞান এর মধ্যেই কিংবদন্তী হয়েছে। ভারতের হাজার বছরের প্রাচীন সমৃদ্ধ সংস্কৃতি ও বর্ণাঢ্য কবিতার জগৎ ইউক্রেনে অনেকের জানা। এ হল ইভান ফ্রাঙ্কোর বিশ্ববাদ, নানা সাহিত্যের অনুবাদ এবং অন্য ইউক্রেনীয় অনুবাদকদের ভারতের বিভিন্ন ভাষা নিয়ে প্রচেষ্টার ফল। ভারতে ইউক্রেনের সাহিত্যের প্রতি বেশি আগ্রহ নেই, কারণ, ইউক্রেন বলে কোন রাষ্ট্র ছিল না। ঔপনিবেশিক কালে পরাধীন ভারতের সাহিত্যও পৃথিবীতে এত প্রচারিত হয় নি।

রাষ্ট্র নির্মাণে ইউক্রেনীয় ভাষার ও কবিতার যে দেশপ্রেমিক ভূমিকা আছে, তা মৃদুলা ঘোষ গভীরভাবে উপলব্ধি করেছেন। স্বাধীন ইউক্রেনে তাঁর একটি বিশাল অবদান - এই প্রথম তিনি ভারতীয় পাঠকের কাছে ইউক্রেন জাতির কাব্যিক চরিত্র তুলে ধরেছেন।

উক্রাইনা আলপনা নামে এই সংকলনটির মাধ্যমে ইউক্রেনের ভারতে প্রথম পদার্পনের এই প্রচেষ্টা খুব উচ্চমানের। ভোরের পাখির মত প্রথম প্রকাশ, তাই সব বিখ্যাত কবিরা না থাকলেও কোন কবিকে বাদ দেওয়া যায় না। বিশেষ প্রশংসনীয় এই, যে কবিতার চয়নে পুনরাবৃত্তি নেই, দার্শনিক ও বিভিন্ন ভাবে সমৃদ্ধ সেই কবিতাগুলিই সংকলনে আছে, যা ইউক্রেনীয় কবিতার বিশ্বব্যাপী মানবমুখী সত্ত্বাকে প্রস্ফুটিত করে। আনন্দের কথা, যে ইউক্রেনের কবিজগতের অনুপ্রেরণা রবীন্দ্রনাথের ১৫০তম জন্ম বার্ষিকীতেই এই সংকলন প্রকাশিত হল।

Зміст

Григорій Сковорода (1722–1794) Hryhoriy Skovoroda	9
Все минає	10
Тарас Шевченко (1814–1861) Taras Shevchenko	11
Доля	12
І небо невмите, і заспані хвилі...	14
Муза	16
Гоголю	20
Павло Чубинський (1839–1894) Pavlo Chubynskyi	26
Ще не вмерла України (гімн України)	24
Іван Франко (1856–1916) Ivan Franko	27
Червона Калино	28
Чого являєшся мені у сні?	30
Леся Українка (1871–1913) Lesya Ukrainka	34
Не журись, коли недоля...	35
Надія	36
На давній мотив	38
Гострим полиском хвилі спалахують...	44
Дихання пустині	46
Афра	48
Пан політик	50
Микола Вороний (1871–1938) Mykola Voronyi	54
Рубіни	52
Олександр Олесь (1878–1944) Olexandr Oles	54
З журбою радість обнялась...	55
Володимир Свідзінський (1885–1941) Volodymyr Svidzinskyi	56
Як люблю я з дитячих літ	57
Утомлений, склонившись на горби, день спав та спав.	58
Спи. Засни.	60
Під голубою водою	62
Павло Тичина (1891–1967) Pavlo Tychyna	63
До кого говорить?	64
Володимир Сосюра (1898–1965) Volodymyr Sosyura	66
Так ніхто не кохав...	68
Микола Руденко (1920 -2004) Mykola Rudenko	67
Совість	70
Голуб і дракон	74
Дмитро Павличко (нар. 1929) Dmytro Pavlychko	78
Мій друг – святий.	79
Коли помер кривавий Торквемада	80
Два кольори	82

Якби я втратив очі, Україно...	86
Потоп	88
Ліна Костенко (нар. 1930) Lina Kostenko	90
Мені відкрилась істина печальна...	91
По-Лицю-Дош	92
Мене ізмалку люблять всі дерева...	98
Ти – Шіва. Ти – індуське божество	96
Василь Симоненко (1935 -1963) Vasyl Symonenko	90
Ти знаєш, що ти людина...	100
Борис Олійник (нар. 1935) Borys Oliynyk	102
Уривок з поеми "Сім"	104
Іван Драч (нар. 1936) Ivan Drach	102
Анатомія літа	118
Крила (новорічна балада)	120
Василь Стус (1938 -1985) Vasyl Stus	103
Як добре те, що смерті не боюсь я...	126
Дерева, вітром підбиті...	128
Ігор Калинець (нар. 1939) Ihor Kalynets	103
Вулиця	130
Людмила Скирда (нар. 1945) Lyudmyla Skyrda	132
Цвітіння мить, кохання мить, мить щастя	133
Півроку ні рядочка	134
Леонід Кисельов (1946-1968) Leonid Kyselyov	132
Ти полинеш сиза, як птах	135
Заспівайте, сестро, заспівайте	136
І мати молода, і сонце юне	138
Софія Майданська (нар. 1948) Sofia Maidanska	140
Біляться дні	141
Моя любов з очима кольору чекання.	142
Польова криничка	146
Василь Герасим"юк (нар. 1956) Vasyl Herasymyuk	140
У храмі	144
Ігор Римарук (1958 – 2008) Ihor Rymaruk	147
Ти знов призначив зустріч...	148
Зустрічають. Питають...	150
Знак	152
Іван Малкович (нар. 1961) Ivan Malkovych	147
Пісня про черешню	154
Музика, що пішла	158
Від перекладача та упорядкувача	160
Післямова українського видавця	162
Додаток	164

সূচীপত্র

* গ্রিগরী স্কাভারোদা (১৭২২-১৭৯৪)	৯
সবই যায় চলে ১০	
* তারাস্ শেভ্চেঙ্কো (১৮১৪-১৮৬১)	১১
নিয়তি ১৩ ধূসর অম্বর মৌন, সুপ্ত তরঙ্গ বারিধি ১৫ কল্পনা ১৭ গোপোলের উদ্দেশ্যে ২১	
* পাব্লো চুবিন্‌স্কি (১৮৩৯-১৮৯৪)	২৬
উক্রাইনার জাতীয় সঙ্গীত ২৫	
* ইভান্ ফ্রাঙ্কো (১৮৫৬-১৯১৬)	২৭
রক্ত কালিনা ২৯	
জাগ কেন বার বার এ মোর নিদ্রাগহনে স্বপনে? ৩১	
* লেসিয়া উক্রাইন্‌কা (১৮৭১-১৯১৩)	৩৪
ক'রো না বিলাপ, যদি ভাগ্যবশে ৩৫ আশা ৩৭ আদি-কথা ৩৯	
থেকে থেকে গর্জে ওঠে ৪৫ শ্বাস বহে মরুভূমির ৪৭ আফ্রা ৪৯	
শ্রী রাজনীতিবিদ ৫১	
* মিকোলা ভরোনি (১৮৭১-১৯৩৮)	৫৪
চুনী ৫৩	
* ওলেক্সান্দ্র ওলেস্ (১৮৭৮-১৯৪৪)	৫৪
দুখের সাথে সুখের আলিঙ্গনে ৫৫	
* ভলদিমির্ স্তিভ্‌জিন্‌স্কি (১৮৮৫-১৯৪১)	৫৬
শিশুকাল থেকে ভরি মন মোর ৫৭ ক্লান্ত হয়ে দিয়ে কুঁজের উপর ভর,	
বেশ ঘুমাচ্ছে দিন ৫৯ ঘুম ঘুম ঘুমুনি ৬১ নীল জলের গভীরে ৬২	

- * পাতুলো তিচিনা (১৮৯১-১৯৬৭) ৬৩
কার সাথে কথা কব? ৬৫
- * ভলদিমির্ সসুয়রা (১৮৯৮-১৯৬৫) ৬৬
এমন ভালবাসেনি কেহ আর ৬৯
- * মিকোলা রুদেক্সো (১৯২০-২০০৪) ৬৭
বিবেক ৭১ কপোত ও সর্পদানব ৭৫
- * দ্মিত্রো পাতুলিচকো (জন্ম ১৯২৯) ৭৮
মিত্র মোর অতি সাধু ৭৯ যবে মৃত্যুর কবলে গেল ৮১
দুই রঙ ৮৩ যদি হারাই কভু দিঠি, হে মোর উক্রাইনা ৮৭ প্রলয় ৮৯
- * লীনা কস্তেক্সো (জন্ম ১৯৩০) ৯০
উপনীত হই এক সত্যে কি করুণ ৯১ মুখে-বাদল-ধারা ৯৩ তুমি শিব, তুমি
হিন্দু দেবতা ৯৭কোন শিশুকাল থেকে ভালবাসে গাছেরা আমায় ৯৯
- * ভাসিল্ সিমোনেক্সো (১৯৩৫-১৯৬৩) ৯০
জান কি তুমি মানব ১০১
- * বরিস্ ওলিইনিক্ (জন্ম ১৯৩৫) ১০২
"সাত" নামক কাব্যের একটি অংশ (চেরনোবিল আণবিক প্রকল্পের দুর্ঘটনায়
অগ্নিরোধ বাহিনীর প্রথম শহীদদের উদ্দেশ্যে রচিত) ১০৫
- * ইভান্ দ্রাচ্ (জন্ম ১৯৩৬) ১০২
গ্রীষ্মের বীক্ষণ ১১৯ ডানা (নব বর্ষের গাথা) ১২১
- * ভাসিল্ স্কুস্ (১৯৩৮-১৯৮৫) ১০৩
মৃত্যুভয় নেই মোর ১২৭ গাছেরা রয়ে সমীরণ আলিঙ্গনে ১২৯
- * ইহর্ কালিন্যোস্ (জন্ম ১৯৩৯) ১০৩
পথ ১৩১

* লুদ্মিলা স্কীর্দা (জন্ম ১৯৪৫)	১৩২
ফুল ফোটার ক্ষণ, প্রেমের অনুক্ষণ, বিন্দু ক্ষণ সুখ ১৩৩	
এক কলমও লেখা নেই ছয় মাস ১৩৪	
* লিওনিদ্ কিসেলিওভ্ (১৯৪৬-১৯৬৮)	১৩২
ঘন নীল বিদায় তোমার পাখির মতন ১৩৫	
গাও দিদি, গাও গান ১৩৭	
কচি বয়স মায়ের, তায় কচি রবির কিরণ ১৩৯	
* সোফিয়া ময়দান্‌স্কা (জন্ম ১৯৪৮)	১৪০
বাড়ছে দিনের আলো পল পল ১৪১ মেঠো কুয়ো ১৪৬	
আমার প্রেমের চোখে অপেক্ষার রঙ বাসন্তী ১৪৩	
* ভাসিল্ হেরাসিম্যুক্ (জন্ম ১৯৫৬)	১৪০
দেবালয়ে ১৪৫	
* ইহর্ রিমারুক্ (১৯৫৮-২০০৮)	১৪৭
আবার দেখা হওয়ার দিলে প্রতিশ্রুতি ১৪৯	
দেখা হয় । প্রশ্ন করে: ১৫১ সঙ্কেত ১৫৩	
* ইভান্ মাল্কোভিচ (জন্ম ১৯৬১)	১৪৭
চেরী ফুলের গান ১৫৫ যে সুর গেছে চলে ১৫৯	
অনুবাদিকার সংযোজন	১৬০
ইউক্রেনীয় প্রকাশকের নিবেদন	১৬২
পরিশিষ্ট	১৬৪



হ্রীহরী স্কাভারোদা (১৭২২-১৭৯৪)

Hryhoriy Skovoroda

২৮৮ বছর আগে এই বিখ্যাত দার্শনিক ও কবির জন্ম ইউক্রেনের খার্কভ জেলার এক গ্রামে মধ্যবিত্ত কসাক পরিবারে। ধর্মে বিশ্বাসী হলেও উদার ছিলেন ও কুসংস্কার মানতেন না। বহুভাষাবিদ, শিল্পে ও সঙ্গীতে পারদর্শী থাকায় তাঁর সব রচনায় সঙ্গীতের স্পর্শ আছে। স্কাভারোদা ছিলেন ইউক্রেনীয়

সাহিত্যের প্রথম জনপ্রিয় লেখক। অনেকেই তাঁর কাছ থেকে শিক্ষা লাভ করেছেন। তারাস্ শেভ্চেঙ্কো লিখেছেন, 'মনে হয় সব লেখায় কাটাকাটি নক্সা এঁকে শুধু স্কাভারোদাকে টুকি।' শেভ্চেঙ্কোর কবিতায় এঁর প্রভাব দেখা যায়। স্কাভারোদার কবিতা আধুনিক পাঠকের কাছে কঠিন, তাতে প্রাচীন শ্লাভ, রুশ, ইউক্রেনীয়, লাতিন-এর প্রয়োগ আছে। তবে ভাবনে ও দার্শনিক মননে কবিতাগুলি অমূল্য। জ্ঞানলাভের জন্য যুবাবয়সে ইউরোপের বিভিন্ন বিশ্ববিদ্যালয়ে ও শহরে ভ্রমণ। সমাজ-সংস্কারের কাজে ধর্মীয় ও রাষ্ট্রীয় প্রতিষ্ঠানে আস্থা না রেখে জীবনের শেষ ২৬ বছর ইউক্রেনের গ্রামে গ্রামে ঘুরেছেন মানবতার বাণী নিয়ে। 'পুস্তকে বুদ্ধির উৎস নয়, বুদ্ধিতে পুস্তকের উৎস', 'দানব দানবের বিরুদ্ধে সাক্ষী দেয় না, নেকড়ে বাঘ নেকড়ে বাঘের মাংস খায় না', 'সময়ের অপচয় সবথেকে বড় অপচয়' - স্কাভারোদার এমন প্রচুর উক্তি অমর হয়ে আছে। আজীবন নিরামিষাশী স্কাভারোদা অন্তিমকালে মৃত্যুর দিনে বনের একটি গাছের তলায় নিজের কবর খুঁড়ে গৃহে গিয়ে শেষশয্যা নিয়েছিলেন। তাঁর শেষ ইচ্ছায় কবরের স্মৃতিস্তম্ভে তাঁরই বিখ্যাত উক্তি - 'এ পার্থিব বসুধরা আমাকে ধরার প্রয়াসে ছুটিয়াছে সর্বক্ষণ, তবে ধরিতে পারে নাই।'

Все минає, але любов після всього остається.
Все минає, але не бог і не любов.
Все є вода — навіщо на води надіятись друзі?
Все є вода, але буде дружня пристань.
На цьому камені заснована вся церква Христова.
Це нам і кефа, петра і скеля.

Григорій Сковорода

সবই যায় চলে, শুধু থাকে অনুরাগ হেম।
সবই যায় জলে, নয় ঈশ নয় প্রেম।
সবই বন্যাজল, কি ফল সুহৃদ তার পিপাসায়?
সবত্র অথৈ জল, আছে শুধু মিলনের ঘাট।
সে ঘাটের কষ্টিপাথরে দেবালয়ের সূচনা
সেই মোদের গীর্জা, মন্দির, পাথর-প্রার্থনা।

হ্রীহরী স্কাভারোদা



তারাস্ শেভ্চেঙ্কো (১৮১৪ - ১৮৬১)

Taras Shevchenko

ইউক্রেনের মহাকবি ও জাতীয় প্রতীক।
আধুনিক ইউক্রেনীয় ভাষার প্রবর্তক ও
সাহিত্যের স্রষ্টা। জন্ম সামন্ততান্ত্রিক
ইউক্রেনের চের্কাসি জেলার মোরিশ্চিসি নামক

গ্রামে, এক দরিদ্র ভূমিদাস পরিবারে। অতি অল্পবয়সে পিতামাতার মৃত্যু। শৈশব থেকেই ছবি আঁকায় আগ্রহ। ১৪-বছরের অনাথ শেভ্চেঙ্কো জমিদার এস্কেলহার্টের দাস ছিলেন, তাঁর সঙ্গে সেন্ট পিটার্সবার্গ গেলেন, সেখানে বালকের গুণে মুগ্ধ হয়ে তৎকালীন কবি, শিল্পী ও সাহিত্যিকদের অনুরোধে ১৮৩৮-সালে দাসত্ব থেকে মুক্তিলাভ। ১৮৪৪-এ আর্ট একাদেমীতে অধ্যয়ন শেষ করে শিক্ষকতা দিয়ে জীবন শুরু। তার সাথে সৃষ্টি কবিতার। জারের স্বৈরাচারের বিরুদ্ধে লেখার জন্যে ১৮৪৭ সালে মধ্য-এশিয়ায় নির্বাসন, কবিতা-লেখা ও ছবি-আঁকা বারণ। ১৮৫৮ সালে বন্ধুদের সাহায্যে নির্বাসন হতে মুক্তি, তবে দশ বছরের অবহেলায় অমত্বে কবির স্বাস্থ্যভঙ্গ। ১৮৬১ সালে মহাকবির মৃত্যু হয়। মাত্র ৪৮ বছরের স্বল্পায়ু জীবনে সৃষ্টির বিশাল ভাণ্ডার শুরু ১৬৪০ সালে 'কবজার' বইটি দিয়ে। তারপর 'কাতেরিনা', 'গাইদামাকি' ও অন্যান্য কাব্যে ইউক্রেনীয় ও বিশ্ব-সাহিত্য সমৃদ্ধ হয়েছে। শেভ্চেঙ্কো রুশ ভাষাতেও লিখেছেন। তাঁর আঁকা বহু চিত্র বিভিন্ন সংরক্ষণশালায় আছে। সংলগ্নিত ছবিটিতে কবি নিজেকে এঁকেছেন। পৃথিবীর অনেক দেশে তাঁর নামে মূর্তি, সড়ক ও প্রতিষ্ঠান আছে। এই সংকলনে একই দিনে লেখা কবিতা 'কল্পনা' ও 'নিয়তি'তে তাঁর জীবনের অব্যক্ত বেদনার প্রকাশ। বিখ্যাত লেখক গোগোলের উদ্দেশ্যে লেখা কবিতাটিতে সামাজিক সমস্যার বিবরণ আছে, যা কবির মনে জাগাত বেদনা ও ক্রন্দন, আর গোগোলের হাতিয়ার ছিল বিদ্রূপ ও কৌতুক। শেভ্চেঙ্কোকে ইউক্রেনীয় জাতির জনক বলা হয়।

Доля

Ти не лукавила зо мною,
Ти другом, братом і сестрою
Сіромі стала. Ти взяла
Мене, маленького, за руку
І в школу хлопця одвела
До п'яного дядка в науку.
«Учися, серденько, колись
З нас будуть люде»,— ти сказала.
А я й послухав, і учивсь,
І вивчився. А ти збрехала.
Які з нас люде? Та дарма!
Ми не лукавили з тобою,
Ми просто йшли; у нас нема
Зерна неправди за собою.
Ходімо ж, доленько моя!
Мій друже вбогий, нелукавий!
Ходімо дальше, дальше слава,
А слава — заповідь моя.

Тарас Шевченко

[9 лютого 1858,
Нижній Новгород]

নিয়তি

তোমার আমার মাঝে ছিল না কপটতা,
সুহৃদ পরম প্রিয়, ভগিনী ও ভ্রাতা
হলে তুমি এ অনাথের। নিয়েছিলে
শৈশবে মোর, হাত ধরে স্নেহে
বিদ্যালয়ে বালককে পৌঁছে দিয়েছিলে
মাদক পণ্ডিতের বি-জ্ঞান জ্ঞানগৃহে।
‘কর অধ্যয়ন, পুত্র মোর, হবে একদিন
আমাদের মাঝে মানুষ,’ বলেছিলে তুমি।
শুনেছি তোমার কথা, হয়েছি যে লীন,
জ্ঞানের সাগরে। বাক্য তব হল ভ্রমী।
কোথা সে মানুষ আমাদের ? থাক এ ব্যর্থতা !
তোমার আমার মাঝে ছিল না কপটতা,
যে পথে চলেছি মোরা, নেই স্পর্শ হেথা
বিন্দুমাত্র অসত্যের, নেই মলিনতা।
চলব এগিয়ে পথে, নিয়তি আমার !
ভাগ্যহত অকপট মিত্র তুমি মোর !
চলি দূরে, আরও দূরে আছে যে গরিমা
সে গরিমা বিজয়ের-- অস্তিম লক্ষ্য এ আমার।

তারাস্ শেভ্চেঙ্কো

[৯ ফেব্রুয়ারী, ১৮৫৮, নিঝনি নোভগোরদ]

І небо невмите, і заспані хвилі;
І понад берегом геть-геть
Неначе п'яний очерет
Без вітру гнеться. Боже милий!
Чи довго буде ще мені
В оцій незамкнутій тюрмі,
Понад оцим нікчемним морем
Нудити світом? Не говорить,
Мовчить і гнеться, мов жива,
В степу пожовкля трава;
Не хоче правдоньки сказати,
А більше ні в кого спитати.

Тарас Шевченко
[Друга половина 1848, Косарал]

ধূসর অম্বর মৌন, সুপ্ত তরঙ্গ বারিধি
সাগরতীরের 'পরে আছে যে ছড়িয়ে
গুচ্ছ গুচ্ছ লতা যত মদমত্ত হয়ে
মরুৎ-বিনা নতশির। হায় মোর বিধি!
কত কাল রব আমি আবদ্ধ পিঞ্জরে
এ বিশাল মুক্ত কাগারে,
এ বিফল সারহীন সমুদ্রের 'পরে
ধরার আকাঙ্ক্ষায়? কয় না যে কথা,
থাকে নীরব, হয়ে নত দলিত, যেন জীবন্ত,
স্তম্ভ ভরা ঐ ঘাস পীতবর্ণ শান্ত;
চায় না বলতে তারা সত্য এই ক্ষণ,
কারে করি জিজ্ঞাসা, নেই অন্য কোন জন।

তারাস্ শেভ্‌চেঙ্কো

[১৮৪৮ সালের দ্বিতীয়ার্ধ, কসারাল]

Муза

А ти, пречистая, святая,
Ти, сестро Феба молодая!
Мене ти в пелену взяла
І геть у поле однесла.
І на могилі серед поля,
Як тую волю на роздоллі,
Туманом сивим сповила.
І колихала, і співала,
І чари діяла... І я...
О чарівниченько моя!
Мені ти всюди помагала,
Мене ти всюди доглядала.
В степу, безлюдному степу,
В далекій неволі,
Ти сіяла, пишалася,
Як квіточка в полі!
Із казарми нечистої
Чистою, святою
Пташечкою вилетіла
І понадо мною
Полинула, заспівала

কল্পনা

শুদ্ধ তব সত্ত্বা পূত পবিত্রা
যেন গ্রীক দেবী থীবা ভগিনী নবীনতা!

অবলা নবজাত মোরে

তুলে নিলে মুক্ত অন্তরে

প্রান্তরের বুকু সমাধি সমতলে

যেথা মুক্ত বাতাস খেলে অবিরল

শ্বেত কুয়াশার উত্তরীয়ে আবরিলে।

দিয়ে দোল গেয়ে গান,

যাদুর পরশে মোহিত হল প্রাণ

হে, মায়াবিনী ঘোর,

সর্বদা সহায় তুমি

সর্ব স্থলে রক্ষা কবচ মোর।

জনহীন একাকী স্তেপ প্রান্তরে

দূর গহন কাগাগারে,

বপন করে রাশি রাশি আশা

শূন্য ক্ষেতে দেখি পুষ্পশোভা।

রুদ্ধদ্বারের মলিনতা ভেঙে

নির্মলা সত্যরূপা

বিহঙ্গ হয়ে উড়ি'

মোর শিরোপরে

নৃত্যে ছন্দে সুরে গানে

Ти, золотокрила...
Мов живущою водою
Душу окропила.
І я живу, і надо мною
З своєю божою красою
Гориш ти, зоренько моя,
Моя порадонько святая!
Моя ти доле молодая!
Не покидай мене. Вночі,
І вдень, і ввечері, і рано
Витай зо мною і учи,
Учи неложними устами
Сказати правду. Поможи
Молитву діяти до краю.
А як умру, моя святая!
Моя ти мамо! положи
Свого ти сина в домовину
І хоть єдиную сльозину
В очах безсмертних покажи.

Тарас Шевченко
[9 лютого 1858, Нижній Новгород]

স্বর্ণালী পক্ষের ক্ষেপনে
যেন জাগ্রত জল সেচনে
করো চিত্ত শুদ্ধি মোর।
আমার এ জীবনের 'পর
লয়ে রূপ অলোক সুন্দর'
শোভে তোমার তারকা।
তুমি আনন্দ ভর'।
নিয়তি নবীনা হে মোর,
করো না পরিত্যাগ। নিশীথে
দিবসে সাঁঝে প্রভাতে
থাকো মোর সাথে,
অকৃত্রিম এ মোর অধরে
দাও তব বাণী, কবিতা-প্রার্থনারে
দিশে দিশে করো যে সফল।
হলে মোর অবসান হে জননী-রূপা!
মাতৃস্নেহে দেহ মোর ভ'রে
সমাধি শায়িত করো সন্তর্পণে
শুধু এক বিন্দু অশ্রু সেই ক্ষণে
অমর আঁখিকোণে রেখো মোর তরে।

তারাস্ শেভ্চেঙ্কো

[৯ ফেব্রুয়ারী, ১৮৫৮, নিঝনি নোভগোরদ]

Гоголю

За думою дума роєм вилітає,
Одна давить серце, друга роздирає,
А третя тихо, тихесенько плаче
У самому серці, може, й бог не побачить.
Кому ж її покажу я,
І хто тую мову
Привітає, угадає
Великеє слово?
Всі оглухли – похилились
В кайданах... байдуже...
Ти смієшся, а я плачу,
Великий мій друже.
А що вродить з того плачу?
Богилова, брате...
Не заревуть в Україні
Вольнії гармати.
Не заріже батько сина,
Свої дитини,
За честь, славу, за братерство,
За волю України.

গোগোলের উদ্দেশ্যে

ভাবনার পর ভাবনারা ঝাঁকে ঝাঁকে উড়ে
কেহ হানে আঘাত হৃদয়ে, কেহ বিদীর্ণ করে,
তৃতীয় কেহ ভাসে নীরবে রোদনে
অন্তরের অন্তরালে, বিধি নাই জানে।
কাহারে দেখাই এই ব্যথা,
কে বা শুনি এই কথা
সাদরে করিবে বরণ
মুক্ত কথার মহিমা?
হয়েছে বিধির সবে - দ্বিধায় দুলিয়া
শৃঙ্খলের বাঁধনে হয় নির্লিপ্ত
তুমি কর' কৌতুক, আমি কাঁদি বটে,
প্রিয় বন্ধু মোর,
বিফল অশ্রু মোর, নাই কিছু ঘটে?
বিধির বিধান ভ্রাতৃবর
উক্রাইনে গর্জিবে না
স্বাধীনতার তোপের হংকার।
না করিবে বিনাশ তাত
আপন ভ্রমের সৃষ্টির
দেশের দেশের তরে করি অঙ্গীকার।

Не заріже – викохає
Та й продасть і різницю
Москалеві. Це б то, бачиш,
Лепта удовиці
Престолові-отечеству
Та німоті плата.
Нехай, брате. А ми будем
Сміяться та плакати.

Тарас Шевченко
[30 грудня 1844, С.-Петербург]

বিনাশ না করি - করিবে লালন
করিবে বিক্রয় তারে
শত্রু কাছে। যেন সেই
নগদ মূল্য গুনি
সিংহাসনের তরে - দেশের
মুক বধিরতার শুল্ক দিয়া।
থাক্ এই কথা। ভ্রাতৃবর
করিব কৌতুক ও ক্রন্দন মোরা এর 'পর।

তারাস্ শেভ্‌চেঙ্কে

[৩০ ডিসেম্বর, ১৮৪৪, সেন্ট পিটার্সবার্গ]

Ще не вмерла України (гімн України)

Ще не вмерла України, ні слава, ні воля,
Ще нам, браття українці, усміхнеться доля.
Згинуть наші вороженьки, як роса на сонці,
Запануєм і ми, браття, у своїй сторонці.
Душу й тіло ми положим за нашу свободу,
І покажем, що ми, браття, козацького роду.
Станем, браття, в бій кривавий від Сяну до Дону,
В ріднім краю панувати не дамо нікому;
Чорне море ще всміхнеться, дід Дніпро зрадіє,
Ще у нашій Україні доленька наспіє.
Душу й тіло ми положим за нашу свободу,
І покажем, що ми, браття, козацького роду.
А завзяття, праця щира свого ще докаже,
Ще ся волі в Україні піснь гучна розляже,
За Карпати відоб'ється, згомонить степами,
України слава стане поміж ворогами.
Душу й тіло ми положим за нашу свободу,
І покажем, що ми, браття, козацького роду.

Павло Чубинський

উক্রাইনার জাতীয় সঙ্গীত

আজও আছে মোদের উক্রাইনা লয়ে গরিমা আর স্বাধীকার
দেখ সবে নিয়তি যবে মুখ তুলে হাসবে আবার ।
ভেদ বিভেদের হবে অবসান, শিশির শুকায় (যেন) সূর্য কিরণে,
একপথে সকলের এই যে মিলন, জেগে ওঠে জন-গণ-মনে ।
দেহ-মন-প্রাণ সাঁপে দিই মুক্তি আন্দোলনে (অর্জনে)
শিরায় আজও বহে কশাক-শোণিত, বাজে হৃদয় স্পন্দনে ।
সিয়ান্ হতে ডন বারে রক্ত চলে সংগ্রাম ভীষণ,
না মানি মায়ের ভূমির 'পর (কোন) পরের শাসন,
কৃষ্ণ সাগর হাসে, সুখে ভাসে বৃদ্ধ দনীপার,
উক্রাইনার লক্ষীর উদয় হয় যে এবার ।
দেহ-মন-প্রাণ সাঁপে দিই মুক্তি আন্দোলনে (অর্জনে)
শিরায় আজও বহে কশাক-শোণিত, বাজে হৃদয় স্পন্দনে ।
প্রানপণ কর্ম আর উদ্যমের ফসল হবেই সফল,
হবে উক্রাইনার দিগ্বিদিক একদিন মুক্তির গানে বিহ্বল,
কার্পাথ গিরিপথে ফিরে তোলে তরঙ্গ স্তেপে প্রান্তরে,
উক্রাইন-গরিমা ছড়ায় শত্রু মিত্র সবার শিবিরে ।
দেহ-মন-প্রাণ সাঁপে দিই মুক্তি আন্দোলনে (অর্জনে)
শিরায় আজও বহে কশাক-শোণিত, বাজে হৃদয় স্পন্দনে ।

পাভ্লো চুবিন্‌স্কি



পাভ্লো চুবিন্‌স্কি (১৮৩৯ - ১৮৮৪)

Pavlo Chubynskyi - ইউক্রেনের জাতীয় সঙ্গীতের রচয়িতা, প্রখ্যাত আইন-বিশেষজ্ঞ, ভূ-বিজ্ঞানী, রুশ-ইউক্রেনের লোকশিল্প, সংস্কৃতি, আচার ও ইতিহাসের অন্যতম গবেষক। কিয়েভের কাছে বরিস্পোল জেলার গ্রামে এক অভিজাত পবিত্র জন্ম। ছাত্রজীবনে সেন্ট-পিটার্সবার্গে বিখ্যাত ভূ-বিজ্ঞানী মিকলুখো-মাকলাই, প্রবোভালস্কি ও কবি শেভ্‌চেঙ্কোর সঙ্গে পরিচয়।

ভৌগোলিক সংস্কার কাজের মধ্যেই নিজ প্রচেষ্টায় প্রচুর গান ও কবিতা লিখেছেন। 'জমিদার ও প্রভুদের প্রতি প্রজাদের তরফ থেকে উপহার-জ্ঞাপনের তত্ত্ব' নামে প্রবন্ধে অরাজকতার আইনী বিশ্লেষণে আমলারা অসন্তুষ্ট। ১৮৬১ সালের পর পোল্যান্ডে ও বলকান উপমহাদেশে জাগল জাতীয় বিপ্লবের হাওয়া। তার প্রভাব পড়ল ইউক্রেনেও। ১৮৬২ সালে কিয়েভে চুবিন্‌স্কি সার্বীয় ও পোলিশ জাতীয়তাবাদী গান অবলম্বনে একটি দেশপ্রেমিক কবিতা লিখলেন। সেই বছরেই জাতীয়তাবাদ প্রচারের অপরাধে আর্খাঙ্গেল্‌স্কে নির্বাসিত হলেন। সেখানে অবস্থান কালেও উচ্চ মানের ভৌগোলিক ও লোক-সংস্কৃতি গবেষণার জন্য রুশ ভৌগোলিক সংস্থা ও বিশ্ব ভৌগোলিক সংস্কার স্বর্ণপদক জয় ও স্বীকৃতি পেলেন। চুবিন্‌স্কির গবেষণার মূল্য কালাতীত, রুশ সাম্রাজ্যের উত্তরে রুশ ও ফিন জাতি বা দক্ষিণ-পশ্চিমে ইউক্রেনীয় ও অন্যান্য জাতির উপর তথ্য আজও প্রয়োজনে লাগে। ১৮৬২ সালে লেখা সেই দেশপ্রেমিক কবিতাটি মিখাইলো ভেবিৎস্কির সুর পেয়ে হল জনপ্রিয় স্বাধীনতার গান। আজ সেটি ইউক্রেনের জাতীয় সঙ্গীত। এই একটি কবিতায় চুবিন্‌স্কির নাম বিখ্যাত হয়ে রইল।



ইভান্ ফ্রান্কো (১৮৫৬ - ১৯১৬) Ivan Franko - তৎকালীন অস্ট্রো-হাঙ্গেরীয়ান সাম্রাজ্যের অন্তর্ভুক্ত পশ্চিম ইউক্রেন জাত ইভান ফ্রান্কো উনবিংশ শতাব্দীর শেষের ইউক্রেনীয় সাহিত্য ও দর্শনে রিয়ালিজমের বিরাট প্রভাব বিস্তার করেছিলেন। বিপ্লবী সোশ্যাল ডেমোক্রেটিক আদর্শে বিশ্বাসী তরুণ ফ্রান্কো অস্ট্রিয়ার সাম্রাজ্যের চোখের

মণি ছিলেন না, একাধিকবার কারাবাস হয়েছে। এই সংগ্রামের মধ্যেও বিভিন্ন ভাষায় সাহিত্য জানার কৌতূহল ছিল অটুট। পোলিশ, জার্মান, রুশ, ইটালিয়ান থেকে অনুবাদ ছাড়াও ফ্রান্কো ছিলেন প্রথম ভারত-বিদ্যার প্রবর্তক। সৃষ্টি হয়েছে ১৮৮৮ সালে মহাভারতের আংশিক অনুবাদ, এছাড়া মার্কণ্ডেয় পুরাণ ও সুত্ত-নিপত্তি, সংস্কৃত ভাষা, ভারতীয় দর্শনের উপর প্রবন্ধ ইত্যাদি। ১৮৯২ সালে পঞ্চতন্ত্রের কাহিনী অবলম্বনে লিখেছিলেন বিখ্যাত কাব্য - 'সম্রাট ও সন্ন্যাসী'। রাশিয়ার জার ও অস্ট্রিয়ার সম্রাটের আজ্ঞায় এই লেখাটি বারণ ছিল। ফ্রান্কোর পঞ্চাশ খণ্ড রচনাবলীতে কোন্ বিষয়ে যে লেখা নেই, তা বলা যায় না। ১৯১৬ সালে জীবনের শেষ বছরে একটি অভিনব বিষয় নিয়ে তাঁর প্রবন্ধ - প্রাচীন ভারতীয় সাহিত্যে জীব ও প্রকৃতির প্রভাব। তাঁর মতে - ভারতীয় সাহিত্য পড়ে তিনি রূপ-রস এমনকি প্রকৃতির গন্ধ পর্যন্ত উপলব্ধি করেন। তাঁর প্রচুর কবিতা সুর দিয়ে গান হিসাবে গাওয়া হয়। এই সংকলনের অন্তর্ভুক্ত দুটি কবিতাই ('কেন জাগো স্বপ্নে' ও 'রক্ত কালিনা') আজ বিখ্যাত গান। পূর্ব ইউরোপের সাহিত্যে ফ্রান্কোর ব্যক্তিত্য সবল পাথরের মত সঙ্কল্পে দৃঢ় হয়েও সৌন্দর্যে সাবলীল।

Червона калино, чого в лузі гнешся?
Чого в лузі гнешся?
Чи світла не любиш, до сонця не пнешся?
До сонця не пнешся?
Чи жаль тобі цвіту на радощі світу?
На радощі світу?
Чи бурі боїшся, чи грому з блакиту?
Чи грому з блакиту?
Не жаль мені цвіту, не страшно і грому,
Не страшно і грому,
І світло люблю я, купаюся в ньому,
Купаюся в ньому.
Та вгору не пнуса, бо сили не маю,
Бо сили не маю.
Червоні ягідки додолу схиляю,
Додолу схиляю.
Я вгору не пнуса, я дубам не пара,
Я дубам не пара;
Та ти мене, дубе, отінив, як хмара,
Отінив, як хмара.

Іван Франко

রক্ত কালিনা, নত কোন মাটির টানে?
নত কেন মাটির টানে?
চাও না আলো, ছোট না তাই রবি কিরণ পানে?
ছোট না তাই রবি কিরণ পানে?
মায়া তোমার ফুল খরচের আনন্দে এ ধরার?
আনন্দে এ ধরার?
নয় পেয়েছ ভয় ঝঞ্ঝার ঐ, বিনা মেঘে বজ্রের?
বিনা মেঘে বজ্রের?
নেই মায়া ওই ফুল খরচের, নেই ভয় ঐ বজ্রের।
নেই ভয় ঐ বজ্রের।
ভালবাসি আলো আমি, সিক্ত স্নাত তাতে,
সিক্ত স্নাত তাতে।
উর্ধ্বপানে চাই না যেতে, শক্তি যে নেই মোর।
শক্তি যে নেই মোর।
রক্ত-কালীন ফলগুলিকে লুটাই মাটির 'পরে।
লুটাই মাটির 'পরে।
উর্ধ্বপানে চাই না যেতে, ওকের সাথে মেলাই না যে তাল,
ওকের সাথে মেলাই না যে তাল ;
তায়, আমায় তুমি, ওক্ বাহাদুর, ছায়ায় ঢাক যেন মেঘ তল
ছায়ায় ঢাক যেন মেঘ তল।
ইভান্ ফ্রাঙ্কো।

*কালিনা - গাঢ় লাল রঙের একপ্রকার ছোট কুলজাতীয় ফল।

Чого являєшся мені
У сні?
Чого звертаєш ти до мене
Чудові очі ті ясні,
Сумні,
Немов криниці дно студене?
Чому уста твої німі?
Який докір, яке страждання,
Яке несповнене бажання
На них, мов зарево червоне,
Займається і знову тоне
У тьмі?

Чого являєшся мені
Усні?
В житті ти мною згордувала,
Моє ти серце надірвала,
Із нього визвала одні
Оті ридання голосні —
Пісні.
В житті мене ти й знать не знаєш,
Ідеш по вулиці — минаєш,
Вклонюся — навіть не зирнеш

জাগ কেন বার বার এ মোর নিদ্রাগহনে
স্বপনে?

চাহ ফিরে কেন মোর পানে
সুরম উজল চোখে সজল দিঠি হেনে,
বেদনে,
যেন ঝর্ণার অতল বুক শীতল-শয়নে?
অধর তোমার কেন নীরব নির্ভাষে?
কি এ যন্ত্রণা, কোন সে বেদনা

কোন সে অতৃপ্ত বাসনা
আঁকা তার 'পরে, যেন রক্তিম গর্জন,
মেতে ওঠে, হয়ে যায় আবার বিলীন
তামস-প্রবাসে?

জাগ কেন বার বার এ মোর নিদ্রা গহনে
স্বপনে?

জীবনে ছিলে মোর গরবে গরবিনী,
ক'রে ছিন্ন হৃদয় মম অন্তর্যামিনী,
তা হতে করলে বাহির আপনি
ব্যথার ক্রন্দনখানি ---

এই গীতধ্বনি ।

জীবনে চাও না জানতে চিনতে মোরে,
পথে যেতে যেতে --- পাশ ফিরে যাও দূরে
মাথা নত করি আমি --- দেখ না তবু ফিরে

І головою не кивнеш,
Хоч знаєш, знаєш, добре знаєш,
Як я люблю тебе без тями,
Як мучусь довгими ночами
І як літа вже за літами
Свій біль, свій жаль, свої пісні
У серці здавлюю на дні.
О, ні!
Являйся, зіронько, мені
Хоч в сні!
В житті мені весь вік тужити —
Не жити.
Так най те серце, що в турботі,
Неначе перла у болоті,
Марніє, в'яне, засиха,—
Хоч в сні на вид твій оживає,
Хоч в жалоцях живіше грає.
По-людськи вільно віддиха,
І того дива золотого
Зазнає, щастя молодого,
Бажаного, страшного того
Гріха!

Іван Франко

এমন কি কর না অভিবাদন আমারে
যদিও জান, জান, জান ভাল ক'রে
অস্বহীন প্রেম মোর তোমারই যে তরে
অনন্ত রাত্রির পর রাত্রি মোর ব্যথায় ভরে
বছরের পর বছর পুঞ্জীভূত হয় ধীরে
আমার এ ব্যথা, এ কান্না, আমার সঙ্গীত
অন্তরের গভীর গোপনে হয় দমিত, বিসর্জিত।

দেখা দাও, শুকতারা, এ নিদ্রাগহনে

শুধু এ স্বপনে!

জীবন-প্রাপ্তন নতুবা রবে সদা বিরহে বিষণ ---
স্রিয়মান।

এ হৃদয় অশান্ত, অস্থির আন্দোলনে,
যেন মুক্তামণি ঐ পঙ্কের মাঝখানে,
ডুবে যায়, ক্ষীণ, স্নান, শূকায় জীবন-বিহনে, ---
স্বপ্নে তুমি থাক তবু জীবন্ততর হ'য়ে,
মায়া করে কিছু প্রাণের পরশ যাও দিয়ে,
মানুষের মত মুক্ত শ্বাস-প্রশ্বাস,
ঐ স্বর্ণ আশ্চর্য্য, ঐ সুখ সস্তার
যায় চেনা অচিরে এই মধু-ভার,
অতি আকাঙ্ক্ষিত, তাই ভয়ংকর
ঐ পাপ-আশ !

ইভান্ ফ্রাঙ্কো



লেসিয়া উক্রাইন্কা (১৮৭১-১৯১৩) Lesya Ukrajinka- ইউক্রেনের অন্যতম মহিলা কবি লারিসা পেত্রোভনা কসাচ্-কুভিৎকার ছদ্মনাম। আধুনিক ইউক্রেনীয় সাহিত্যে রোম্যান্টিক ভাবধারার প্রবর্তন করল এঁর সৃষ্ট কবিতা, গান, নাটক ও অন্যান্য রচনা। সমকালীন বন্ধুদের মতে লেসিয়ার কথার শক্তি ছিল ইউক্রেনের সমস্ত পুরুষদের মিলিত শৌর্যের চেয়েও বেশী। শৈশব থেকে স্বাস্থ্য দুর্বল, পরে আক্রান্ত হন যক্ষ্মা রোগে।

শারীরিক দুর্বলতা মনকে দুর্বল করে নি, কবিতায় ও লেখায় কোন নৈরাশ্যের সুর নেই। লেসিয়ার সহিত্যে রূপকের ও উপমার প্রাধান্য দেখা যায়। অভিজাত শিক্ষিত পরিবারে জন্ম ও আত্মীয় মিখাইলো দ্রাগোমানভের সংস্পর্শে এসে লেসিয়ার পরিচয় হয়েছিল তৎকালীন ইউরোপের ও ইউক্রেনের নামী লেখকদের সঙ্গে, যেমন ভিক্টর যুগো, ইভান তুর্গেনেভ ও ইভান ফ্রাঙ্কো। বিপ্লবীদের সঙ্গে জড়িত থাকায় পিসীমা ওলেনার নির্বাসন হয়। এই ঘটনা মনে গভীর দাগ কাটে। তখন লেসিয়া মাত্র ৯ বছর বয়সে লেখেন প্রথম কবিতা - 'আশা'। সেটি এই সংকলনে আছে। অসুখের কারণে উষ্ণ আবহাওয়ার অঞ্চলে যেতে হত - জর্জিয়া, গ্রীস, মিশর ইত্যাদি। সেখানে লেখা কবিতাও এই সংকলনে আছে। জ্ঞানার্জন ও শিক্ষা ছিল পারিবারিক ঐতিহ্য। রুশ ও ইউক্রেনীয় ভাষা ছাড়া লেসিয়া জানতেন ইংরাজী, ফরাসী, জার্মান, পোলিশ, বুলগেরিয়ান, লাতিন, গ্রীক ও ইতালিয়ান। তারই মধ্যে অভিনব প্রচেষ্টা - জার্মান ভাষা থেকে ঋগ্বেদের স্তোত্র অনুবাদের কাজ। ভারতের ও প্রাচ্যের দেশগুলির সংস্কৃতি জানার কৌতূহলের প্রভাব দেখা যায় লেসিয়ার রূপক প্রয়োগে, নাটিকায় ও অন্যান্য রচনায়। ১৪০ বছর পরেও লেসিয়া সব মহিলা কবিদের অনুপ্রেরণা।

"Не журись, коли недоля
В край чужий тебе закине!
Рідний край у тебе в серці,
Поки спогад ще не гине.

Не журись, не марно пройдуть
Сії сльози й тяжка мука:
Рідний край щиріш любити
Научає нас розлука".

Леся Українка

‘ক'রো না বিলাপ, যদি ভাগ্যবশে
নিয়ে যায় তোমারে অজানা বিদেশে!
স্বদেশকে রাখ মনে যত্নে ভালবেসে,
স্মৃতিপট যতদিন না যায় ধ্বংসাবশে।

ক'রো না বিলাপ, যাবে না বিফলে
এ কঠিন নিপীড়ন, এই অশ্রুজল;
স্বদেশকে ভালবাসা প্রতি পলে পলে
বিচ্ছেদ-বেদনে হয় অধিক প্রবল।’

লেসিয়া উক্রাইনকা

Надія

Ні долі, ні волі у мене нема,
Зосталася тільки надія одна:

Надія вернутись ще раз на Україну,
Поглянути ще раз на рідну країну,

Поглянути ще раз на синій Дніпро, –
Там жити чи вмерти, мені все одно;

Поглянути ще раз на степ, могилки,
Востаннє згадати палкії гадки...

Ні долі, ні волі у мене нема,
Зосталася тільки надія одна.

Леся Українка
[Луцьк, 1880]

আশা

স্বাধিকার হারিয়েছি, সৌভাগ্যলক্ষ্মী গেছে দূর অস্তাচল,
বেঁচে আছে একমাত্র আশা, মোর পথের সম্বল।

আশা আর একবার ফিরে যাব দূর উক্রাইন্ ,
দেখব মাতৃভূমি আর বার ভরে দুনয়ন,

হারাবে দুচোখ আর একবার দ্বীপারের নীলে, -
জীবন-মৃত্যুর দ্বন্দ্ব মোর যেথা এক হয়ে মেলে;

ভাসবে দুচোখে আবার স্তেপ আর সমাধিসৌধ বিস্তৃতি,
জাগবে নতুন হয়ে কবেকার রূপ-রস-স্বপ্নভরা স্মৃতি

স্বাধিকার হারিয়েছি, সৌভাগ্যলক্ষ্মী গেছে দূর অস্তাচল,
বেঁচে আছে একমাত্র আশা, মোর পথের সম্বল।

লেসিয়া উক্রাইন্কা

[১৮৮০, লুৎস্ক]

На давній мотив

– На добридень, ти моя голубко!
«На добридень, мій коханий друже!»
– Що ж сьогодні снилось тобі, любко?
«Сон приснився, та дивненький дуже».

– Що ж за диво снилось тобі, мила?
«Мені снились білії лелії...»
– Тішся, мила, бо лелія біла –
Квітка чистої та любої надії!

«Мені снились білії лелії,
Що хитались в місячному світлі,
Мов гадали чарівнії мрії,
І пишались гордії, розквітлі.

І сіяли дивною красою,
Мов непевні, чарівничі квіти,
І блищали ясною росою,
Що горіла, наче самоцвіти.

আদি - কথা

--- সুপ্রভাত, আদরিনী, অনুরাগ - রাগিণী !

--- "সুপ্রভাত, প্রিয়তম, প্রাণসখা মোর !"

--- স্বপ্নিল ছিল কি তব বিগত রজনী ?

--- "ছিল সে স্বপ্ন এক, ভীতিবহ ঘোর।"

--- কি দারুণ দুঃস্বপ্নে চিন্তিত তুমি প্রিয়া ?

--- "শুভ পবিত্র লিলি ফুল, স্বপ্নে দিল দেখা".....

--- শান্ত হও প্রিয়া মোর, শ্বেত ফুল হিয়া

--- পবিত্র প্রেমের চিহ্ন, আশা লিপি লেখা ! ---

"স্বপ্নে দিল দেখা শ্বেত লিলি ফুল দল",
দোলে দোদুল দোলায় স্নিগ্ধ চন্দ্রিমায়,
মায়াবী স্বপ্নাবেশে যেন ভাবনা - উতল,
মেলে ধ'রে পাপড়ি ফুটে ওঠে গরিমায়।

শোভনা কল্পলোকের অধরা - মাধুরী
নমিতা বিনতা যেন মোহিনী পুষ্পিতা
স্ফটিক শিশির - স্নাত, স্নিগ্ধ - অন্তরী
মণিমাল্য জ্বলে শিশির - বিন্দু সরিতা।

Приступила я до квітів ближче, —
Всі лелії раптом затремтіли,
Почали хилитись нижче, нижче
Та й пожовкли, далі почорніли.

І з лелій тих чорних поспадали
Всі блискучі самоцвітні роси,
На травиці схиленій лежали,
Наче дрібні та ряснії сльози...»

— Дивний сон твій, любко моя гожа...
А мені червоні снились рожі.
«Тішся, милий, бо червона рожка —
То кохання квітка та розкоші!»

— Мені снилося: червоні рожі
Пломеніли в промені злотистім
І були на райські квіти схожі,
Запашнії, з листячком барвистим.

Так чудово рожі паленіли
Від кохання й радості ясної

ফুলের দলের কাছে যবে গেছি আমি
ত্রস্ত হ'য়ে ভয়ে কেঁপে উঠল যে তারা
নতশির হ'ল নত আরো নতগামী
পীত হ'য়ে কালো হ'য়ে তাদের হল সারা।

ঝরে পড়ে কালো সেই লিলি দল থেকে,
আলো - করা মণিমালা শিশির বিন্দুরা,
লুটায় ঘাসের 'পরে, ভাসে আঁকে বাঁকে,
ফোঁটা ফোঁটা যেন ঘন অশ্রু বন্ধারা।

--- অলীক, অচিন্ত্য তব স্বপ্ন প্রিয়তমা
রক্ত গোলাপ জেগেছিল স্বপ্নে মম, ---
"ভাব কেন প্রিয়তম, গোলাপ রক্তমা,
অনুরাগে রাঙা প্রেম, ঐশ্বর্য্য - সম।"

--- স্বপ্নে মোর লালে লাল গোলাপের দল,
সোনা - গলা আলোর জ্যোতিতে ভাস্বর
অমরাবতীর ফুল যেন করে ঝলমল,
সুবাস, রঙের ছটা, প্রতি পাপড়ি 'পর।

গোলাপেরা সলাজে সুরম হাসে মধুর - আনন্দে
প্রেম আর আনন্দের জোয়ারে ভাসে সুষমার,

І цвіли, тремтіли та горіли
Від жаги палкої, таємної.

Приступив я до одної рожі,
Пригорнуть хотів я до серденька.
Зблідли раптом рожі прехороші
І найкраща роженька ясненька.

Та й умиласть буйною росою
Та моя найкраща рожка мила,
Мов підтята гострою косою,
Полягла мені до ніг, змарніла...

Засмутилась пара молоденька,
Зрозуміти снів своїх не може
І додому поверта смутненька.
Дай їм, боже, щоб було все гоже!..

Леся Українка
[20 березня 1890 р.]

শর্মিল কুঞ্চিত কাঁপে থরথর, জ্বলে দহনে,
গোপন কোন এক তাতল কামনায়।

এগিয়েছি আমি যেই এক গোলাপের কাছে,
আপন - হৃদয়ে জড়াতে চেয়ে তারে আলিঙ্গনে,
বণহীন হ'ল সব গোলাপেরা গাছে গাছে,
একটি গোলাপ শুধু রয় রক্তিম বরণে।

ধৌত হ'য়ে প্রবল বেগে শিশির-ঝটিকায়,
গোলাপ-সুন্দরী মম চিত্ত-ফল্লুধারা,
যেন তীক্ষ্ণ ছুরিকাঘাতে হতপ্রায়,
লুটায় চরণে মোর শূন্য প্রাণহারা।

দুঃখভারে বিনত নবীন হৃদয় যুগলের,
অপারগ বিফল আপন স্বপ্ন বিশ্লেষণে;
গৃহে ফেরে উৎকর্ষাভার নিয়ে হৃদয়ের,
শুভ থাকে যেন ওরা বিধির বিধানে।

লেসিয়া উক্রাইনকা

[২০ মার্চ, ১৮৯০ সাল]

Гострим полиском хвилі спалахують
після бурі у місячну ніч,
наче військо мечами двусічними
хоче знять вражі голови з пліч.

Зброї полиск і гомін розкотистий –
се неначе повстання гуде,
наче сила народна узброєна
без упину на приступ іде.

Кожний меч – промінь світла небесного
впав згори й знов угору зроста;
кожний гук – відгук сили одвічної,
що руйнує й будує світа.

Людське море, ти, сило народна,
з чого ж ти собі зброю скуєш?
Що повстане на місці порожньому
того світа, що ти розіб'єш?..

Леся Українка
[8.11.1902, San-Remo]

থেকে থেকে গর্জে ওঠে চেউ শানিত মত্ততায়,
ঝড়ের শেষের পর চন্দ্ৰিমা কোন রাতে,
দ্বৈতমুখ তলোয়ার ধারী যেন যুদ্ধবাজ সেনানী
শত্রুস্কন্ধ হতে শির উদ্যত নিপাতে ।

অস্ত্র জ্বলে বান্‌বান্, ওঠে তীর হুংকার রব,
পঞ্জীভূত শক্তি যেন জাগে অভ্যুত্থানে
গণশক্তি অস্ত্রসাজে সেজে উঠে আজি,
দুর্নিবার আক্রোশে অগ্রসর হয় আন্দোলনে ।

অমরার তারার আলেয় শানিত প্রতি অসি,
ধরার মাটিতে দিয়ে ধরা, উঠে দাঁড়ায় উর্ধ্বশীর,
প্রতিটি ধ্বনিতে তার --- জাগে হাজার প্রতিধ্বনি,
আওয়াজে তার হয় লয়, হয় সৃষ্টি পৃথিবীর ।

জনসমুদ্র, গণচেতনার তরঙ্গ তোমার বিন্দুতে বিন্দুতে
কি দিয়ে গড়বে যে তুমি অস্ত্র সুনিপুণ?
এই পৃথিবীতে, তোমার সৃষ্ট এই ধংসস্তূপ হতে
পরাজিত পথের উপর, জাগবে কি আবার নতুন?.....

লেসিয়া উক্রাইন্কা

[৮ নভেম্বর, ১৯০২, সান-রেমো, ইতালি]

Дихання пустині

Пустиня дише. Рівний подих, вільний,
Гарячий він та чистий, мов святий.
Пісок лежить без руху золотий,
Так, як лишив його Хамсін свавільний.

Феллах працює мовчки, тихий, пильний,
Будує дім, – там житиме пустий,
Летючий рій мандрівців, і густий
Зросте навколо сад. Феллах – всесильний.

Оази робить він серед пустині,
Лиш не для себе... Он уже він пише
Бігунчик по піддашші... Поколише

Гарячий вітер одіж на людині,
Обсушить піт... і далі по рівнині
Пролине... знов і знов... Пустиня дише.

Леся Українка

শ্বাস বহে মরুভূমির

শ্বাস বহে মরুভূমির, মুক্ত প্রশ্বাস-নিঃশ্বাস ওঠে নামে সমতালে
লেলিহান শিখা ছোটে, নেই মলিনতা, যেন পূত-পবিত্র অনলে
রাশ রাশ সোনা বালু পড়ে রয় কোন গতিহীনতার কোলে
খেয়ালী সাইমন যেন কেড়ে নিয়ে গতি রেখে গেছে ফেলে

ফেল্লাহ্ কাজ করে সন্তর্পণে, বাক্‌হীন মূক শান্ততায়
গড়ে তোলে সৌধ --- ক্ষণিকের তরে বাস ক'রে যাবে তায়
ঝাঁকে ঝাঁকে উড়ে আসা লঘুচিত্ত পর্যটকেরা, নিপুণ গভীরতায়
গড়ে ওঠে তারি ধারে মনোহর বাগিচা, ফেল্লাহ্-র সর্বশক্তিমানতায়

সৃষ্টি হয় মরুদ্যান, মরুভূমির ধূসর বুকের উপরে
শুধু তার নিজের জন্য নয় আঁকে সে কারুকার্য এখন
প্রবেশ-দুয়ার 'পরে, এমন সময়ে বহে বেগে অনল পবন

রুদ্ধতাপ ছড়ায় তার পোষাকে-আষাকে আর অন্তরে
ঘর্ম শুকায়ে দেয় আর উড়ে যায় দূর সমতলে ধূ ধূ প্রান্তরে
দীর্ঘশ্বাস ফেলে বার বার শ্বাস বহে মরুভূমির।

লেসিয়া উক্রাইনকা

Аффа

Тихо. Повітря стоїть нерухоме, як води стоячі.
Закам'янів на бананах широкий нерепаний лист.
Ніжні мімози – і ті розгорнули листочки гарячі.
Мліють без мрії...
Ой, звідки се вирвався свист?
Сурмлять у сурми і гатять в різкі тарабани!
Гей, схаменіться! Хто сеї муки хотів?
Їм байдуже! Гучно силу свою англічани
Берегом Ніла несуть, щоб Єгипет почув і тремтів.
Ледве пройшли, як замкнулася тиша за ними,
Наче в таємному храмі велика запона важка.
Пальми поникли покірно гілками сухими, смутними,
Наче на їх налягла невидимого бога рука.
Небо, збіліле від спеки, вже сивіє, мов попеліє,
День до останку згорів і лишилася нічка бліда;
Світла немає, а темрява наче не сміє
В тишу пекучу вступити. Не видно зірок ні сліда;
Так, наче світ спорожнів. Не співа на добраніч пташина.
Тільки безгучно літають великі, чудні кажани,
Гасла неначе розносять, щоб стихилась ціла країна.
Летом своїм оксамитним ще збільшують тишу вони...

Леся Українка

আফ্রা

নিস্তন্ধ। বাতাস স্থবির স্থির জলের মতন,
কলাবনের শুকনো বিরাট পাতাগুলি যেন পাথর,
নশ্ব মিমোসার অতীত সুগন্ধবাহী তৃষিত পাতার ভীড় স্বপ্নহীন সুপ্ত
কোথায় যেন বাজল বাঁশি?
দুন্দুভির রণডংকার আর শিঙ্গার হুংকার, থামো থামো!
কিসের আয়োজন? কে চায় তোমার এ সঙ্গীত?
ওরা মানে না! পথ চলে ইংরাজ সেনানী
নীল নদের বুক চিরে মিশরকে করতে ভীত, স্তম্ভিত!
ওদের প্রস্থানের পর বিনা বাক্যব্যয়ে নিস্তন্ধতা গ্রাস করে সব,
রহস্যময় মন্দিরের রুদ্ধদ্বার যবনিকার মত।
নতশির শাখা-বিশাখার বিষমতা নিয়ে খেজুর গাছেরা
কোন অদৃশ্য শক্তির দৈবিক স্পর্শে বিনীত, অবনত।
উষ্ণ প্রখরতায় আকাশ হয়েছে শ্বেত, ধূসর ধূসপ্রায়
সমস্ত আলো নিয়ে দিন গেল চলে, কিছু নেই, রাত্রি বণহীনা,
নেই দীপ্তি, কাজল তামসী থাকে অজানা আশঙ্কায়,
উষ্ণ মৌণীর পাছে হয় তপোভঙ্গ। নিশ্চুপ নিঃপ্রভ সব তারকারত্না।
যেন, শূন্য এই পৃথিবী, নেই পাখিদের ঘুম-পাড়ানী গান,
নিঃশব্দে ওড়ে শুধু বাদুড়েরা, বিশাল অদ্ভুত,
নিভিয়ে সকল আলো, সমস্ত দেশ হয় নিস্তন্ধ নিঃপ্রাণ।
উড়ন্ত রেশম ডানায় ওদের ঘনঘোর হয়ে আসে নিস্তন্ধতার দূত।
লেসিয়া উক্রাইনকা

Пан політик

Ба, що робить? скінчився вік лицарства,
доводиться не списом, а пером
боротися з Іваном та Петром...
Пишу статтю «Про кризис господарства».

Я знаю сам, що я не Ціцерон,
а все ж таки, коли я добре схочу,
то хоч кого словами обморочу...
Скажу промову в «партії ворон».

Тепер всяк хам показує натуру,
а нам мовчать? Се був би чистий страм!
Та я готов піддержать сім програм!..
Я становлю свою кандидатуру!

Леся Українка

শ্রী রাজনীতিবিদ

কিং কর্তব্যম্? বাহুবলের দিনের হয়েছে অবসান,
ধারালো অসি নয়, নিয়ে সূক্ষ্ম কলম,
যে কোন ইভান পেরোর সাথে লড়াই চরম...
তাই রচি 'দেশের সমস্যা'র নিখুঁত নিবন্ধন।

জানি, নই আমি রোমের বাগ্মী সিসেরো,
তা হোক, কাঁচা আবেগ ঠেসে ভরে মনে,
মাথা ঘোরাই হাজারো বুলির ভাষণে ...
কাকের কা-কা কীর্ণনে সুর মিলিয়ে বেসুরো।

যত শরমহীনেরা আজ লড়ে খুলে মুখোস,
আমি থাকি মৌন কেন? এত আত্মহত্যার সমান!
জলদি শপথ ঠুকি, দিয়ে প্রোগ্রাম সাত খান!...
প্রার্থী হয়ে আবার দাঁড়িয়ে মুছি সব দোষ।

লেসিয়া উক্রাইন্কা

Рубіни

Одкриваються рани —
Давні рани, нудьгою роз'ятрені знов...
І червону, гарячу мов полум'я, кров
Вже не стримує зілля омани.
Одкриваються рани...
Рани, серця рубіни!

Ви — єдиний той дар, ви — той скарб жебрака,
Що дала йому з ласки кохана рука
На розстанні, в останні хвилини...
Рани, серця рубіни!..
О, рубіни червоні!

А хто ж вам дав багровість і полиск огня?
Моя гордість, ображена гордість моя,
Що тримала мій гнів на припоні.
О, рубіни червоні!..

Микола Вороний
[1911]

চুনী

ক্ষতগুলি গেছে খুলি -

বিস্মৃত ক্ষত হ'তে বৈচিত্রহীনতার ঘর্ষণে আবার

রাঙা অগ্নিশিখার মত উষ্ণ শোণিতধার

বাঁধতে নারে চোখে ধূলি দেওয়া গাছ গাছালি

ক্ষত - সে যে চুনের হৃদয় কলি!

তুমি একমেব উপহার, অমূল্য ধন ভিখারীর

দিয়ে গেছে প্রেমে ভরা হাত প্রিয়ার

বিদায়ের কালে, শেষ লগ্নে গোধূলি

ক্ষত - সে যে চুনের হৃদয় কলি!

হে চুনী রক্ত কলি!

কে দিল তোরে ঘন আগুনের মোহ?

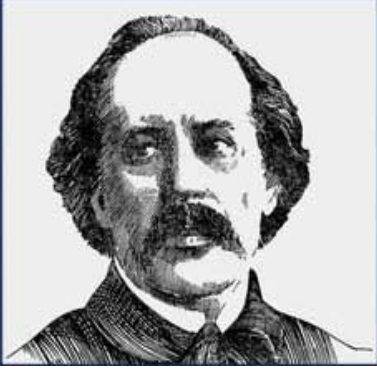
দমিত গরিমা মোর যেন হয়েছে দাহ,

শেষ আভা রাখে রত্ন দীপ জ্বালি

হে চুনী রক্ত কলি!

মিকোলা ভরনী

[১৯১১]



মিকোলা ভরনী (১৮৭১-১৯৩৮) Mykola Voronyi - অভিনেতা, অনুবাদক, নাট্যকার, ও পরিচালক হিসাবে পরিচিত এই কবি ঊনবিংশ-বিংশ শতাব্দীর সক্রিয় গণচেতনা গঠনে ও সাংস্কৃতিক উন্নয়নে বিশেষ ভূমিকা থাকায়, প্রথমে জার-এর রাশিয়া, পরে স্টালিনের হাতে নির্যাতিত হয়েছিলেন।

জার-এর রাশিয়া থেকে আশ্রয় ভিয়েনা ও ল্ভোভ শহরে, ১৯১৭ সালে বিপ্লবের পর ফিরে এসে ইউক্রেনীয় কেন্দ্রীয় সংসদের ও জাতীয় থিয়েটারের প্রতিষ্ঠা করেন। ১৯২০ সালে দেশে ফিরে সাংস্কৃতিক কাজে ব্যস্ত ছিলেন, ১৯৩৪-এ স্টালিনের স্বৈরাচারের শিকার হলেন, ১৯৩৮ সালে ওডেসা আঞ্চলিক কোর্টে জাতীয়তাবাদের মিথ্যা অভিযোগে মৃত্যুদণ্ডে নিহত। ক্রুশ্চেভের আমলে এই তথ্য জানা যায়। ১৯৫৭ সালের ১০ই নভেম্বর মিকোলা ভরনীকে দোষমুক্ত ঘোষণা করা হয়। ভরনী ইউক্রেনীয় কবিতায় প্রথম মডার্নিজম নিয়ে আসেন বিংশ শতাব্দীতে। সংকলনের 'চুনী' কবিতাটি তারই এক নমুনা।

ওলেক্সান্দ্র ওলেস্ (১৮৭৮-১৯৪৪) Oleksandr Oles - আসল নাম ওলেক্সান্দ্র কান্দ্রিবা, ইউক্রেনের ছন্দময় কবিতার গুরু। মাত্র ১৭ বছর বয়সে কবিতায় হাতেখড়ি। ১৯১৯ সালে রুশ বিপ্লবের পর দেশ ছেড়ে প্রাগে (অধুনা চেক্ রিপাবলিক) বসবাস করেন। প্রথম ও দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধের সময়ে প্রবাসী ইউক্রেনীয়দের মধ্যে জনপ্রিয় কবি। ১৯৪৪ সালে পুত্রের মৃত্যুসংবাদ জানার কিছুদিন বাদেই প্রাগে কবির মৃত্যু হয়। ওলেসের কবিতা দূর প্রবাসের বেদনায় সিঞ্চিত। সংকলনের কবিতাটি ওলেসের প্রথম কবিতার একটি। লেখা ১৯০৬ সালে।



З журбою радість обнялась...
В сльозах, як в жемчугах, мій сміх.
І з дивним ранком ніч злилась,
І як мені розняти їх?!

В обіймах з радістю журба.
Одна летить, друга спиня...
І йде між ними боротьба,
І дужчий хто — не знаю я...

Олександр Олесь
[1906]

दुखेर साथे सुखेर आलिङ्गन
अश्रुधारे, मुक्ता बरे, आमार हासिर धारा ।
उषार साथे निशार ए मिलन
केमने याय बाँधन छिन्न करा?

सुखेर साथे दुखेर आलिङ्गन
एक मुक्तिकामी, अपर बाँधन माने
माते रणद्वन्द्वे ए दुजन
शक्ति ये कार - मन मोर नाहि जाने

ওলেক্সান্দর ওলেস

[১৯০৬]



ভলদিমির্ স্তিভ্‌জিন্‌স্কি (১৮৮৫-১৯৪১)

Volodymyr Svidzinskyi - ১৯১৭র বিপ্লবের প্রজন্মের কবিদের দ্বন্দ্ব ও ব্যথার উদাহরণ হল স্তিভ্‌জিন্‌স্কির জীবন। প্যারিসে ১৯৫৯ সালে 'নিহত নবজাগরণ' নামে এক বইয়ে এঁর সৃষ্টির দুই পর্বের উল্লেখ আছে, ১৯২৭-র আগে অর্ধ নীরবতা, তারপর স্টালিনের আমলে পূর্ণ নীরবতা। বিপ্লবোত্তর সাহিত্যে

সোশ্যালিস্ট রিয়ালিজম মেনে না স্তিভ্‌জিন্‌স্কির মত যে কবিরা সিম্বলিজম বা সুররিয়ালিজম নিয়ে ভাবছিলেন, তাদের সোভিয়েত রাষ্ট্র সন্দেহ করত। কৃষিপ্রধান পশ্চিম ইউক্রেনের ভিন্নিৎসা জেলার পাদ্রী পরিবারে জন্ম, তাছাড়া রিয়ালিজম ও বাস্তবিক ব্যাপার নিয়ে না লিখে কাল্পনিক জগতে রূপক ও উপমা ব্যবহার করে লেখার জন্য স্থানীয় সোভিয়েত কর্তৃপক্ষ তাঁর সমালোচনা করতেন, 'এই কবি দেশ-কালের বাইরে কোন এক কাল্পনিক জগত নিয়ে আছেন, রাষ্ট্রের ও সমাজের তাঁকে কি প্রয়োজন,' ইত্যাদি ইত্যাদি। তাঁর কবিতা ছাপা হত না। তা হলেও মানিয়ে নিয়ে খার্কভে কাজ করতেন। স্তিভ্‌জিন্‌স্কির প্রচুর অনুবাদের কাজ আছে, রুশ, ফরাসী, জার্মান, স্প্যানিশ, বেলোরুশিয়ান ভাষার সাহিত্যের অনুবাদ, এমনকি অ্যারিস্টোফেনিসের তিনটি কমেডিও তাঁর অনূদিত। স্তিভ্‌জিন্‌স্কির মৃত্যু বড় দুঃখের। ১৯৪১তে দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধে জার্মানদের আক্রমণের সময় যারা তখন রাষ্ট্র নির্দেশে খার্কভ ছেড়ে যান নি, তাদের শত্রুর সঙ্গে যোগসাজসের সন্দেহে আটক করা হয়। স্তিভ্‌জিন্‌স্কি তার একজন। তারপর তাদের অন্য জায়গায় নিয়ে যাওয়ার আগেই জার্মানরা আক্রমণ করে। তখন কেউ যাতে শত্রুর সঙ্গে হাত না মেলাতে পারে, তাই এক খামারে সকলকে বন্ধ করে আগুন দিয়ে পুড়িয়ে মারা হয়। পার্থিব জীবনের সঙ্গে সঙ্গে স্তিভ্‌জিন্‌স্কির অনেক কবিতা ও সৃষ্টিও লুপ্ত হয়। বিভিন্ন সূত্রে পরে উদ্ধার করে সংকলিত হয়েছে।

Як люблю я з дитячих літ
Твої памеги, скелі, гаї,
І веселки блискучий зліт,
І зазорені тканки твої.
І в замисленім смутку їх красоти
Як я часто згадати хотів
Те, про що мріяв ти
І чого не створив.

Володимир Свідзінський
[1932]

শিশুকাল থেকে ভরি মন মোর
পাহাড়, মেঘ, বন তোমার সৃজন,
উজল উত্তরণ দেখি রামধনুর
তারার মুকুট ওই তোমার সাজন।
সুন্দরের গভীরে মজে যবে মন
খুঁজে ফেরে জানতে এ সত্য সুপ্ত
কি বাসনা কর তব স্বপনে গোপন
তোমার সৃষ্টি তাই আজো অসমাপ্ত।

ভলদিমির্ স্তিভ্‌জিন্‌স্কি

[১৯৩২]

Утомлений, склонившись на горби,
День спав та спав. Здавалося, ніколи
Не перейдуть глибини голубі
Над нивами. Лінивий, безтурботний,
І я приліг і дався владі сну.
Прокинувся – мій дню блискучий, де ти?
Тонка імла від сходу простяглась,
Двома крильми обнявши рівне поле.
У гробі сонце. Дерево замовкло,
І, холодом у чашечках тюльпанів
Зачинені, позастигали бджоли,
Що дзвінко так дитинство дня вітали.

Володимир Свідзінський
[1929]

ক্লান্ত হয়ে দিয়ে কুঁজের উপর ভর,
বেশ ঘুমাচ্ছে দিন। যেন
পাখিরা যাবে না পেরিয়ে আকাশ আর
মাঠের উপর দিয়ে। অলস, বিচারহীন,
আমিও সঁপেছি নিজেকে ঘুমের কবলে।
জেগে দেখি - কোথা গেল দিন ওই, হয় মোর দিন?
ছায় পুরব প্রান্ত হতে কুয়াশার ছায়া,
মুক্ত প্রান্তর জড়িয়ে ধরে দুই ডানায়।
সূর্য গেল কবরে। কথা শেষ, তরু অবলা,
আর, টিউলিপ পেয়ালা ভরপুর শীত ঢেলে
করে বন্ধ দ্বার, আটক মৌমাছি তায় অচলা,
দিনের শৈশব-জয়গানে মেতেছিল এককালে।

ভলদিমির্ স্ত্রিভদ্‌জিন্‌স্কি

[১৯২৯]

Спи. Засни.

Повертались на берег рибальські човни.
Хмарка по хмарці спадає до сходу,
Як по листку листок.
Два верхівці під'їжджають до броду:
Сивий кінь поклав копита в воду,
Вороний – на пісок.
Чуєш, дівчина темнокоса
Грає в сопілку червоним рибкам,
Щоб червоні рибки заснули –
І вони засипають.
Чуєш, по звуку звук
Поглинає морок недобрий.
Дальній міст тремтить, як протятий павук,
Будяки підіймають шпаги на обрій
І тануть. В'яжуться гронами
Зорі, пускають віти увіч.
Спи, колихнула запонами
Ніч.

Володимир Свідзінський
[1932]

ঘুম ঘুম ঘুমুনি

ঘুমাও। ঘুম ঘুম ঘুমুনি।

সব মাছডিঙি এল কূলে এখনি।

মেঘের 'পরে মেঘ পূর্বে অস্তগামী,

পাতার 'পরে যেন পাতা ঝরে।

অশ্মারোহীদ্বয় ঘাটে এসে থামে:

ধূসর ঘোড়াটি খূর ডুবিয়ে জলে নামে,

কৃষ্ণ হয় তার খূর ডোবায় বালুচরে।

শোন, কৃষ্ণকেশী ঐ মেয়ে

বাজায় বাঁশি রাঙা মাছেদের তরে,

রাঙা ঐ মাছ যেন যায় ঘুমিয়ে -

ঐ ওরা ঢুলে ঢুলে পড়ে।

শোন, ধবনির 'পর ধবনি

ডোবে আঁধার অনন্তে।

দূরসেতু টলমল, ধরে মাকড়সা জাল টানি,

আগাছা শূল উঁচিয়ে দিগন্তে

ডোবে অতলে। গুচ্ছ গুচ্ছ তারা বোনা হলে

ছড়ায় মুখ'পরে অপরূপ জালখানি।

ঘুমাও, পর্দা দুলিয়ে উঠে বলে

রজনী।

ভলদিমির স্ভিদ্‌জিন্‌স্কি

[১৯৩২]

Під голубою водою
Живу я, живу...
Золотоокий рибак надо мною
Закидає сіть огневу.
Крізь принадливі очка — знаю —
Не раз, не два я промкнувсь,
В баговінню садів погуляю,
А колись таки попадусь.
Спопеліє, застигне смутно
Жовтава зоря в імлі,
Ніч надійде нечутно.
І не знайде мене на землі.

Володимир Свідзінський

নীল জলের গভীরে
বাস মোর, অতলে
স্বর্ণচোখ ধীর উপরে
অগ্নিজাল ফেলে।
জালিনেশা ছিদ্র-চোখের - জানি -
বারে বারে ফাঁকি দিয়ে অধরা,
পাঁক-পাতালে ঘুরে ফিরে গুনি,
কোনদিন পড়ব যে ধরা।
ধূসরতা আসবে নেমে ধীরে
চাকবে স্বর্ণালী তারা কুয়াশায়,
নিঝুম নামা নৈশ-আঁধারে
এ বিশ্ব হারাবে আমায়।

ভলদিমির্ স্তিভ্‌জিন্‌স্কি

পাভ্লো তিচিনা (১৮৯১-১৯৬৭) Pavlo

Tychyna - সোভিয়েত ইউক্রেনের বিখ্যাত

কবি। ১৯৪৩-১৯৪৮ সালে ইউক্রেন

রিপাবলিকের শিক্ষামন্ত্রী, ১৯২৯ সাল থেকে

অ্যাকাডেমী অফ সায়েন্সের সদস্য,

১৯৫৩-১৯৫৯ সালে ইউক্রেনের সুপ্রীম সংসদের

অধ্যক্ষ। এ ছাড়া প্রচুর সন্মান, মেডাল ও উচ্চ

পুরস্কারে ভূষিত তিচিনার কবিতার জগতে

প্রবেশ সঙ্গীতের মধ্যে দিয়ে। শিক্ষকের পুত্র

গ্রামের ধর্মীয় স্কুল শেষ করে অর্থনীতি নিয়ে পড়াশুনা করেন। তবে স্ট্যাটিস্টিকাল

ব্যুরো ও সাহিত্যে পত্রিকা ছাড়া ১৯১৬-১৯২০ সালে যুক্ত হন গানের দলে। তখন

১৯১২ সালে প্রকাশ প্রথম কবিতাগুলোর, শুরু হল কবিতা লেখা। ১৯২৩ সালে

‘হাট’ নামে বিপ্লবী চেতনার কবিদের সংস্থার সূচনা, তার পরে ১৯২৬ সালে ফ্রি

অ্যাকাডেমি অফ প্রলেটারিয়ান কালচার স্থাপন করেন। মাক্সিম গোর্কির বন্ধু

তিচিনাকে ইংরাজী কবি টি এস ইলিয়টের সঙ্গে তুলনা করা হয়। জ্ঞানপিপাসু

তিচিনা পড়াশুনায় সর্বক্ষণ ছিলেন মগ্ন, কালিদাসের শকুন্তলা ও সংস্কৃত সাহিত্যের

অনেক অনুবাদ তিনি মন দিয়ে পড়তেন। তিচিনার প্রশ্ন করতে দ্বিধা ছিল না। এই

সংকলনের অন্তর্ভুক্ত সুদূর ১৯২৬ সালে কবিগুরু রবীন্দ্রনাথের উদ্দেশ্যে লেখা

কবিতাটি তার জ্বলন্ত উদাহরণ। রাজনীতির ও সাংস্কৃতিক জীবনের জটিল

পরিস্থিতিতে কবিগুরুর কাছেই তাঁর আবেদন। ১৯৩০ সালে কবিগুরুর মস্কো

আসার সময় তিচিনার সঙ্গে দেখা হয়েছিল কিনা কোন উল্লেখ কোথাও নেই। তবে

তাঁর বাড়িতে (এখন মিউজিয়াম) লেখার টেবিলের পাশেই রবীন্দ্রনাথের উপস্থিতি,

সমগ্র রবীন্দ্র রচনাবলী ইংরাজী ও রুশ ভাষায়। উত্তরসুরী কবি ও অনুবাদকরা

তিচিনার কাছ থেকেই রবীন্দ্রনাথের মহিমা জানতে পান, রবীন্দ্র অনুবাদক ডিঙ্কর

বাত্যুক, লেস তান্যুক এর জন্য সোশ্যালিস্ট কবি তিচিনার কাছে কৃতজ্ঞ।



До кого говорить?

До кого говорить?
Блок у могилі. Горький мовчить.

Рабіндранате-голубе!
З далекої Бенгалії
прилинь до мене на Україну,
Я задихаюся, я гину.

Я покажу такі речі
в однокласовій ворожнечі,
Я покажу всю фальш, всю цвіль
партійно-борчих породіль.
А братні зуби? Дружній зиск?
Гнучка політика, як віск.

Коли б були це генерали,
ми б знали, що робить.
А в гім то й річ, що це кати
однокласовії...

Рабіндранате-голубе,
та де ж той серп нам, молот і лани?
Рабіндранате-голубе,
од достоевщини звільни!

До кого говорить?
Блок у могилі. Горький мовчить.

Павло Тичина
[1926]

কার সাথে কথা কব?

সমাধিশায়িত ব্লক। গোর্কি নীরব।

রবীন্দ্রনাথ প্রিয় মোর!

ঐ বঙ্গ হতে সূদূর

এস মোর কাছে এই উক্রাইনাতে

শ্বাস রুদ্ধ হয়ে আসে, চলেছি মরিতে।

পারি যে দেখাতে তোমায় এমন আচার

শ্রেণী ঐক্য তবু তায় দ্বন্দ্ব, ব্যভিচার।

মিথ্যার আবরণ করি উন্মোচন

এ পাটি-জনিত যত স্বপ্ন বিসর্জন।

ভ্রাতার দাঁতাল শাসন? বন্ধু করে জবাবদিহির দাবী?

রাজনীতি এ সর্প-পিছল, মোমের মত ছাঁচে ঢালা সবই।

ঐ সমর-শাসন কালে

ছিল জানা, কি করলে চলে

মূল কথাটি হল যে, এই জল্লাদ-দলে

একমেব শ্রেণীর থেকে নির্গত সকলে

রবীন্দ্রনাথ - প্রিয় মোর,

গেল কোথা আমাদের কাস্তে, হাতুড়ি, আর ক্ষেতের প্রান্তর?

রবীন্দ্রনাথ - প্রিয় মোর,

দস্তয়েভ্‌স্কির প্রবল প্রভাব থেকে কর মুক্ত অন্তর।

কার সাথে কথা কব?

সমাধিশায়িত ব্লক। গোর্কি নীরব।

পাভ্লো তিচিনা [১৯২৬]



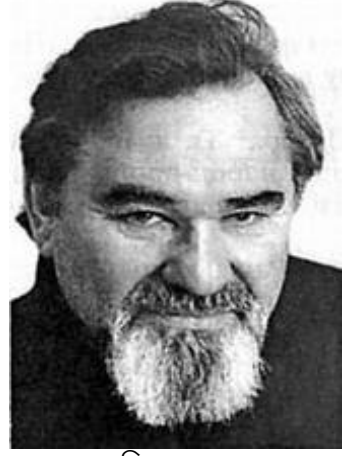
ভলদিমির সস্যুরা (১৮৯৮ - ১৯৬৫) Volodymyr Sossyura - সোভিয়েত আমলে ইউক্রেনের নামকরা কবি, যাঁর ছন্দের ছোঁয়ায় ইউক্রেনীয় ভাষায় শব্দের তাৎপর্য ও সৌন্দর্য্য নতুন হয়ে বিকশিত হয়েছে। তাঁর কথায় 'অদৃষ্ট আমার সাদা-কালোর বিপরীতের খেলায় বর্ণাঢ্য'। পূর্ব ইউক্রেনের শিল্প-প্রধান ডনবাস নামক কয়লাখনির এক গদ্যময় এলাকায়

এক শিক্ষকের পরিবারে জন্ম, কৈশোরে প্রথমে জাতীয়তাবাদী ও পরে বিপ্লবী দলে যুদ্ধে অংশগ্রহণ, প্রথম কবিতার প্রকাশ ১৯১৭, তারপর ১৯২২ সালে লেখা 'লাল শীত' বিপ্লব-কালীন কাব্যের মধ্যে সবথেকে রোম্যান্টিক বলে গন্য হয়। তখনকার বিপ্লবী লেখক ও শিল্পী সংস্থার সক্রিয় সদস্য। সস্যুরার অন্যতম বৈশিষ্ট্য হল প্রেমের কবিতা। বিপ্লবের জয়গানের সাথে সাথে সামাজিক ঘটনার সঙ্গে আন্তরিক ও ব্যক্তিগত আবেগের অপূর্ব মিশ্রণে সস্যুরার কবিতা যেমন তাঁকে ১৯৪৮ সালে সোভিয়েত রাষ্ট্রের শ্রেষ্ঠ স্ট্যালিন পুরস্কার এনে দিয়েছে, তেমনই ১৯৪৪ সালে লেখা তাঁর বিখ্যাত কবিতা 'ইউক্রেনকে ভালোবাসো' ও জাতীয়তাবাদী কবিতার জন্য ১৯৫১ সালে প্রাভ্‌দা পত্রিকায় 'বুর্জোয়া ন্যাশনালিস্ট' বলে তিরস্কৃত হয়েছেন। ১৯৪৯ সালে স্ত্রী মারিয়া রাষ্ট্রীয় গুপ্ত তথ্য প্রচারের অপরাধে পাঁচ বছরের জন্য কাজাখস্তানে নির্বাসিত ছিলেন। তবে নিয়তির নিষ্ঠুরতায় প্রেমের কবিতা লেখা থামে নি। থামে নি ডনবাস বা দোনেৎস্ক কয়লাখনির রুক্ষ এলাকার প্রকৃতির সৌন্দর্য্য নিয়ে ইউক্রেনের সাহিত্যের ভাণ্ডার বৃদ্ধি। সাদা-কালোর অদৃষ্টের সস্যুরার কবিতায় সোভিয়েত ইউক্রেনে সর্বত্র প্রেম নিবেদন হত, কয়লাখনি থেকে ক্রাইমিয়ার সমুদ্রতীরে বা কার্পাথ পাহাড়ে। এখন ইউক্রেনের জাতীয় অনুষ্ঠানে পড়া হয় 'ইউক্রেনকে ভালোবাসো' কবিতাটি।

মিকোলা রুদেক্সো (১৯২০-২০০৪) -

Mykola Rudenko - জন্ম পূর্ব

ইউক্রেনের লুগানস্ক জেলার কয়লাখনির মজুর পরিবারে। দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধের সময়ে কিয়েভ বিশ্ববিদ্যালয়ের ভাষাতত্ত্বের ছাত্র মিকোলার যুদ্ধে ডাক পড়ল। লেনিনগ্রাদ অবরোধ ভাঙার অপারেশনে তিনি যোগ দিয়েছিলেন। গুরুতর আহত হয়ে ফিরলেন।



যুদ্ধ শেষে ৬ টি পদক, বিশেষ রেড স্টার পুরস্কারে ভূষিত হলেন। ১৯৪৭ সালে প্রথম কবিতার বই প্রকাশিত হয়। ৫০ ও ৬০-এর দশকে আরো বই প্রকাশনা, পাটির সচিবের পদ, সাহিত্যিক সংস্থার কর্ণধার - সব মিলে সুন্দর জীবন-যাপনে বাধা দিল তাঁর বিবেক। ১৯৪৯-এ 'কস্মোপলিটিজমের' বিরুদ্ধে পাটির আভ্যন্তরীণ সংগ্রামে তিনি ইহুদি লেখকদের পাটি থেকে বহিস্কারে বাধা দিয়েছিলেন। ৭০-এর দশকে মস্কোতে ডিসিডেন্ট-দের সঙ্গে মানবাধিকার নিয়ে আন্দোলনে লিপ্ত, ১৯৭৪ -এ পাটি থেকে বহিস্কৃত, ১৯৭৫-এ গ্রেপ্তারের পর দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধের ৩০-তম বার্ষিকী উপলক্ষে যুদ্ধে অংশগ্রহণের জন্য ছাড়া পান। ১৯৭৬-এ আন্দ্রেই সাখারভ ও অন্যান্যদের সঙ্গে আলোচনার পর সৃষ্টি হল ইউক্রেনের হেল্‌সিঙ্কি সংঘ। ১৯৭৭ সালে গ্রেপ্তার হওয়ার পর ১২ বছরের কারাদণ্ড হয়। ১৯৭৮ সালে তাঁর সব বই পাঠাগার ও দোকান থেকে তুলে নেওয়া হয়। ১৯৮৭ সালে পেরেক্সোইকায় গণ-আবেদনে ছাড়া পান। তারপর দেশ ছেড়ে প্রথমে জার্মানী, পরে মার্কিন যুক্তরাষ্ট্রে চলে যান। ১৯৯০ সালে দেশে ফিরে আসেন। ইউক্রেনের সর্বোচ্চ সম্মানে সম্মানিত রুদেক্সোর অনেক লেখা এখনো অপ্রকাশিত, যেমন সংকলনের অন্তর্গত 'কপোত ও সর্পদানব'। শুধু তাঁর মাতৃভূমিতে শেষ দিনযাপনের স্বপ্ন সফল হয়েছে।

Так ніхто не кохав. Через тисячі літ
лиш приходять подібне кохання.
В день такий розцвітає весна на землі
І земля убирається зрання...

Дише тихо і легко в синяву вона,
простягає до зір свої руки...
В день такий на землі розцвітає весна
і тремтить од солодкої муки...

В'яне серце моє од щасливих очей,
що горять в тумані наді мною...
Розливається кров і по жилах тече,
ніби пахне вона лободою...

Гей, ви, зорі ясні!.. Тихий місяцю мій!..
Де ви бачили більше кохання?..
Я для неї зірву Оріон золотий,
я — поет робітничої рані...

Так ніхто не кохав. Через тисячі літ
лиш приходять подібне кохання.
В день такий розцвітає весна на землі
І земля убирається зрання...

Дише тихо і легко в синяву вона,
простягає до зір свої руки...
В день такий на землі розцвітає весна
і тремтить од солодкої муки...

Володимир Сосюра
[1922]

এমন ভালোবাসেনি কেহ আর। হাজার বছরে শুধু একবার
হয়ত বা আসে এমন ভালবাসা।
সেদিন পুষ্পিত বসন্ত আশ্বাস এ বুকে মৃত্তিকার
সেজে ওঠে ধরা এই, হতে লগন - উষা
ঘন নীল পানে ধায় শান্ত ধীর বাতাস তার নিঃশ্বাস,
হাত মেলে ধরে ঐ তারার উচ্চতায়
সেদিন এ বুকে মৃত্তিকার পুষ্পিত বসন্ত আশ্বাস
কাঁপে তার বুক মিঠে সুখের ব্যথায়
চঞ্চল হৃদয়ে হেরি দিঠি সুখভরা,
আলো দেয় জীবনের কুয়াশার 'পর ...
রক্তের ছন্দে নাচে শিরা-উপশিরা,
রক্ত যেন বসন্তের গন্ধে ভরপুর ...
হে তারার দল! .. শান্ত চন্দ্র ভাতি !...
কোথায় দেখেছ বলো এই প্রেম ছবি?
তার তরে ছিন্ন করি স্বর্ন বৃহস্পতি,
আমি যে শ্রমিক ভোরের কবি ...
এমন ভালোবাসেনি কেহ আর। হাজার বছরে শুধু একবার
হয়ত বা আসে এমন ভালবাসা।
সেদিন পুষ্পিত বসন্ত আশ্বাস এ বুকে মৃত্তিকার
সেজে ওঠে ধরা এই, হতে লগন - উষা
ঘন নীল পানে ধায় শান্ত ধীর বাতাস তার নিঃশ্বাস,
হাত মেলে ধরে ঐ তারার উচ্চতায়
সেদিন এ বুকে মৃত্তিকার পুষ্পিত বসন্ত আশ্বাস
কাঁপে তার বুক মিঠে সুখের ব্যথায়

Совість

1

Спомини – то ніжні, то суворі –
Почуттів і пристрастей ріка...
То як ранки сонячні у морі,
То неначе спина їжака...

Розгортаючи забуту повість,
Серце виведуть на давній слід,
І розбудять неспокійну совість,
І жбурнуть із полум'я у лід.

Мов нежданний жар їдкого перцю,
Обпечуть і подих твій і смак
Там, де ступати належить серцю,
Раптом заворушиться їжак.

І поволі зрозумієш: винен, -
Друг законно не подав руки
Ти давно пробачитись повинен,
А насправді робиш навпаки.

Тільки совість – твій суддя недремний,
Серце не рятуючи від ран,
Розшукає закуток півтемний,
Де в тобі ховається тиран.

І виводячи уже не вперше
Під голки осіннього дощу,
Воскову корону з тебе здерши,
Тихо мовить: - Більше не прощу.

বিবেক

১

স্মৃতি --- কিছু স্নিগ্ধ শান্ত কিছু বা ধূসর
বোধ আর আবেগ নদীর প্রবলতা
যেন সূর্য্যে ভরা ভোর ঐ সমুদ্র পর
আর সজারুর পিঠের কাঁটার তীক্ষ্ণতা
বিস্মৃত কাহিনীর ঝাঁপি খুলে এক,
প্রবীণ পথের চিহ্ন খোঁজে যে হৃদয়
জাগায় অশান্ত অধীর বিবেক,
আগুন হতে ছুঁড়ে ফেলে হিম শীতলতায়।
ঝাল লঙ্কার হঠাৎ আঘাতে,
যেন জ্বলছে তোমার স্বাদ, শ্বাস
হৃদয় যেখানে চায় পা ফেলতে,
সজারু ধেয়ে আসে সেথা উর্ধ্বশ্বাস।
বোঝ না কি অল্পে অল্পে: হয়েছি পাপী
বাড়ায় নি হাত বন্ধু সততায় ভীত।
ক্ষমা করার কথা তোমার অনেক কালব্যাপী
নিয়ত জীবনে কর আচরণ বিপরীত।
বিবেক বিচারপতি তোমার নিঃসুপ্ত অটল
বাঁচাতে পারেনি নিজেকে ক্ষত হতে হৃদয়-অধুর
খুঁজে ফিরেছে আঁধারী অন্ধ আবরণ কাল
কোথায় তোমাতে লুকিয়ে দোঁদগু নির্ভুর।

В куточках духу таємниць доволі:
Здобутки, втрати – наче в бою.
Немо на замінованому полі,
перед душею власною стою.

Яка в ній завтра хвиля переможе,
Затьмарить зір чи насталить перо?...
Душа – та ж сама! – породити може
Нелюдський злочин і святе добро.

Щодня за щось печу собі докором
І вивіряю так свої думки,
Щоб у вразливу совість вічний сором
Не загаяв тернові шпичаки.

Не жду багатства і не кличу славу,
Але шукаю меж в добрі і злі,
Бо тільки так приходить горде право
Людиною прожити на землі.

Микола Руденко

আর হয়নি আজ প্রথম নির্গত
সূচীতীক্ষ্ণ ভাদ্রের বাদলের ধারা
মোমের মুকুট ক'রে তোমার শিরচ্যুত
ধীরে বলে: আর যায় না ক্ষমা করা।

২

হৃদয়ের আনাচে কানাচে কত গুপ্তধন
জয় করা রত্ন, পরাজয়-মণি --- সব একই রণে।
মাইন্ড ছড়ানো মাঠের উপরে দাঁড়িয়ে যেমন,
মুখোমুখি হয়েছি আমি নিজ মনের সামনে।
কি তরঙ্গ তার মাঝে জয়ী হবে কাল,
মেঘে ঢাকবে তারা নাকি কলম হবে ধারাল লৌহসূলভ?
মন --- সে তো তাই ! --- পারে দিতে যে কোন ফসল
অমানবিক পাপ কিংবা দৈব কোন শুভ।
নিত্য জ্বলে কি কারণে দংশিত বিবেকে
মননের রাশি তায় ঘুরিয়ে ফিরিয়ে
যাতে সীমাহীন শরম ঐ কোমল বিবেকে
হনন না করে তীর কাঁটাঘাত দিয়ে।
ঐশ্বর্য্য চাই না, চাই না নাম যশ অনেক,
খুঁজে ফিরি মধ্যমণি শুভ আর অশুভর মাঝে,
এ পথেই আছে মুক্ত অধিকার উন্নত মস্তক
এ মাটিতে বসুধার মানুষের বেঁচে থাকা সাজে।

মিকোলা রুদেক্সো

Голуб і дракон

В часи, які розтанули в імлі,
У зелені садів та винограду
На сонцем задарованій землі
Страшний дракон скорив людську громаду.

Він був захланний вереда-ласун:
Любив хмільне пиво і страву свіжу,
Хлоп'ят – уранці, уночі – красунь
Вели йому на втіху і на їжу.

Та сталось так, що люд його скарав.
І всюди покотилось понад краєм:
- На охоронця наших вічних прав
Ми голуба святого обираєм.

Йому поставили високий трон
І привели полки для охорони.
Аж гульк: на троні знов сидить дракон
І видає драконівські закони.

কপোত ও সর্পদানব

কুজ্জাটিকা ঘেরা যুগান্তরের অবসরে
ভেদ করে বাগিচা আর দ্রাক্ষাফল
অরুণ আশীষ ভরা এই মর্ত 'পরে
বীভৎস সর্পদানব জনমত করে দখল।

ভোগী আমোদী মুখ গেলে গোগ্রাস -
মদিরার তরঙ্গ, আর পঞ্চব্যঞ্জে,
প্রাতে - কিশোর, সাঁঝে - রমনী অভিলাষ
প্রতিদিন লাগে তার তৃপ্তি পূরণে।

এমনি একদিন হারিয়ে জনপ্রীতি
দিকে দিকে ছড়ালো আন্দোলন
আমাদের অধিকার সুরক্ষার পতি
দানব নয়, করি সং-কপোত নির্বাচন।

এল কপোতের তরে উচ্চ সিংহাসন
বিশেষ বাহিনী লাগল প্রহরী
হায়: তায় বসে কেন সর্পদানব পুন:
সর্পিলা আইন-কানুন করে জারী।

Ішли роки, кривавились віки,
Драконів кидали в пустиню голу.
І знов, і знов з народної руки
На трон злітав богоподібний голуб.

Того не записали до пуття
Ні літописець, ні міністр-ледащо,
Як воскресав дракон із небуття
І як він голуба ловив у пащу.

Не знали навіть слуги та раби,
Які стояли в царській охороні:
Драконами ставали голуби,
Як тільки опинилися на троні.

Микола Руденко

যুগে যুগে রক্তক্ষয়ে শতাব্দীর উলট-পালট
হার মানে কত সর্পদানব-কপট
বার বার মানুষের হাতের ব্যালট
বসাল সিংহাসনে কত সৎ-কপোত ।

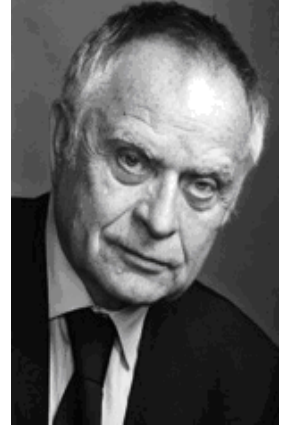
লেখে নি কখনো কেউ কেন এই গাথা
না কোন নথিবিদ, না মন্ত্রী অলস গাথা
বার বার কেমনে সর্পদানব তোলে মাথা
কেমনে তার ছলে হয় কপোত বাঁধা

জানে না এ কথা প্রহরী, দাস কিবা সেবী
থাকে যারা চিরক্ষণ রাজার প্রহরে:
সর্পদানব হয় সব কপোত-স্বভাবী
যেই বসে সিংহাসন 'পরে ।

মিকোলা রুদেক্সো

দমিত্রো পাব্‌লিচকো (Dmytro Pavlychko) -

জন্ম ১৯২৯ সালে পোল্যান্ডে, কৃষকমত্ৰিকায় উৰ্বৰ ইভানো-ফ্রাঙ্কোভ্‌স্ক জেলায় কৃষি পরিবারে। কবিতাই পাব্‌লিচকোর জীবনের ইতিহাস। দারিদ্র্য-জর্জর এই প্রদেশ ১৯৩৯ সালে হিটলার-স্ট্যালিন চুক্তিতে সোভিয়েত দেশের মধ্যে যুক্ত হয়, ইউক্রেনের মুক্তির আশায় আনন্দে দশ বছরের পাব্‌লিচকো কবিতা লেখেন। স্ট্যালিনের মৃত্যুর পর ইঙ্গিত করে



স্পেনের ইনকুইজিশনের অধিপতি তর্কেমাদাকে রূপক করে লেখা, 'মৃত নৃশংসীর স্বেরাচার, মানুষ শুনে খবর হাসে না ভয়ে আর, জ্ঞানে এখনও বেঁচে সব কারাগার' - তার সঙ্গে অন্যান্য দেশপ্রেমিক কবিতার গুচ্ছ 'সত্যের ডাক'-এর প্রকাশ। লাল মলাট, উপরে 'লেনিন আসছেন' লেখা সত্ত্বেও বইটির ১৮ হাজার কপি ধ্বংস হয়। ইউক্রেনীয় ভাষা আন্দোলনের নেতা পাব্‌লিচকো। লেখা বন্ধ নয়, রূপকের দ্বারা প্রতিবাদ। এছাড়া প্রেম ও প্রকৃতির কবিতায় এঁর খুব নাম। ভারতীয় সাহিত্য ও রবীন্দ্রনাথের প্রতি খুব শ্রদ্ধা। কবি বলেন, 'সব সুন্দরী রমনীদের আমি কৃষকলি বলি, এ তো ভারত থেকে পাওয়া।' এছাড়া শেক্সপীয়ারের সমগ্র রচনাবলী, হোসে মার্তি, দাস্তের রচনার অনুবাদ কবির কলমে। ইউক্রেনের লোকশিল্পে লাল-কালো রঙের সেলাইকে সুখ-দুঃখের জীবনের রূপক 'দুই রঙ' কবিতাটি এতই জনপ্রিয় গান, যে আবালবৃদ্ধবনিতার মুখস্থ। প্রচুর পদক, সম্মান পেয়েছেন কবি। সংসদ সদস্য ও রাষ্ট্রদূতও হয়েছেন। আজ একাশি বছর বয়সেও বিংশোত্তরী যুবকের মত সচল। ভাষা ও গণতন্ত্র নিয়ে লড়াই সরকারের সঙ্গে। নতুন কবিতায় তার ছোঁয়া। এখন বহির্বাসী-ইউক্রেনীয় সংগঠনের সভাপতি। ভাষণে ও মননে হাদ্যিক। বলেন, 'মাতৃভাষাকে অবহেলার মত পাপ নেই। ইউক্রেনের কৃষকদের বিশ্বাস 'মাটি অনাদরে বন্ধ্য হয়', তেমন মাতৃভাষার অবমাননা করলে মনের মাটিতে ফসল ফলে না। আমাদের ভাষা আন্দোলন - মনের মাটিতে ফসল ফলানোর সংগ্রামের ইতিহাস।'

Мій друг – святий. Тобі в обличчя плюне,
Якщо згадаєш, Боже борони,
Що був партійний за часів Комуни,
Писав-брехав, як інші брехуни.

Він згадує мої гріхи й провини, –
Я зізнаюся, каюся, терплю.
Їм святощі його, як хліб із глини
В осколках товченого кришталю.

Дмитро Павличко
[2009]

মিত্র মোর অতি সাধু। মুখের 'পরে ভৎসনা-থুথু ফেলে
মনে যদি করাও কখনো তাকে, দোহাই ভগবান,
ছিল সে পাটির সদস্য কম্যুনিজমের আমলে,
লিখত বলত কত মিথ্যা, সবার সমান।

আমার পাপ ও ভুলের করে সে বিচার চুলচেরা
করি সহ্য, স্বীকার, অনুতাপ, নত মাথা নিয়ে।
তার সাধুতা ঐ খল রুটি, যা হয়েছে গড়া
ধারালো কাঁচের গুড়োর মাটি-ময়দা দিয়ে।

দমিত্রো পাব্লিচকো
[২০০৯]

Коли помер кривавий Торквемада,
Пішли по всій Іспанії ченці,
Зодягнені в лахміття, як старці,
Підступні пастухи людського стада.
О, як боялися святі отці,
Чи не схитнеться їх могутня влада!
Душа єретика тій смерті рада -
Чи ж не майне де усміх на лиці?
Вони самі усім розповідали,
Що інквізитора уже нема.
А люди, слухаючи їх, ридали...
Не усміхались навіть крадькома;
Напевно, дуже добре пам'ятали,
Що здох тиран, але стоїть тюрма!

Дмитро Павличко

যবে মৃত্যুর কবলে গেল রক্তপিপাসু তর্কেমাদা
ছোটে পূজারী-পদ্মীরা স্পেনের এখানে ওখানে,
শোকে ভিক্ষু হয়ে, সাজে দীন, ছিন্ন বসনে,
মানব-জঙ্গলের চালকেরা, মনে কুটিলতা।
কি যে ভয় পেয়েছিল ঐ পদ্মী-মনে,
টলমল হল কি আজ তাদের ক্ষমতা!
উদার মুক্তমনে অতীব প্রসন্নতা -
তবু নেই কেন হাসি মুখের এক কোণে?
সকলেরে বলে বেড়ায় পদ্মীরা ঘুরে ঘুরে,
মৃত নৃশংসীর স্মৈরাচার, গেছে সে ওপার।
মানুষেরা শুনে খবর, কাঁদে উচ্চ স্বরে
ভুলেও হাঁপ ছেড়ে বেঁচেছি বলে না আর;
স্মৃতি ও চেতনায় বোধ জাগে বারে বারে,
গত ঘাতক, এখনও বেঁচে সব কাণাগার!

দমিত্রো পাভ্লিচকো

Два кольори

Як я малим збирався навесні
Піти у світ незнаними шляхами,
Сорочку мати вишила мені
Червоними і чорними нитками.

Два кольори мої, два кольори,
Оба на полотні, в душі моїй оба,
Два кольори мої, два кольори:
Червоне – то любов, а чорне – то журба.

Мене водило в безвісті життя,
Та я вертався на свої пороги,
Переплелись, як мамине шиття,
Мої сумні і радісні дороги.

Два кольори мої, два кольори,
Оба на полотні, в душі моїй оба,
Два кольори мої, два кольори:
Червоне – то любов, а чорне – то журба.

দুই রঙ

ছিল যবে এ জীবনে ফাগুন দিনের টানে
বহির্বিশ্বে পা দিতে পথ অজানা অচেনা
নূতন বসন পেলাম তবে মায়ের হাতের দানে
রক্ত রাঙা লালেতে আর কালো সুতোয় বোনা।

দুরঙ এ আমার, এই দুইটি রঙে,
আছে ছেয়ে অস্বর, আছে ছেয়ে অন্তর
দুরঙ এ আমার, এই দুইটি রঙে
রক্তিম প্রেম আর কৃষ্ণ ব্যথা জর্জর।

জীবন নিয়ে গেছে মোরে বহু অচিন - পুরে
এসেছি যে ফিরে এখন আপন অঙ্গন - দ্বারে
মায়ের হাতের বুনন যেমন, তেমন ঘুরে ঘুরে,
সুখদুঃখের পথগুলি মোর নক্সা হয়ে ফেরে।

দুরঙ এ আমার, এই দুইটি রঙে
আছে ছেয়ে অস্বর, আছে ছেয়ে অন্তর
দুরঙ এ আমার, এই দুইটি রঙে
রক্তিম প্রেম আর কৃষ্ণ ব্যথা জর্জর।

Мені війнула в очі сивина,
Та я нічого не везу додому,
Лиш горточок старого полотна
І вишите моє життя на ньому.

Два кольори мої, два кольори,
Оба на полотні, в душі моїй оба,
Два кольори мої, два кольори:
Червоне – то любов, а чорне – то журба.

Дмитро Павличко

চোখের উপর ঘনিয়ে আসে সাঁঝের মত জরা
নেই যে কিছুই সঞ্চিত আজ ফিরছি যবে ঘর
পুরানো ঐ বসন শুধু হাতের মুঠোয় ধরা
মোর জীবনের নক্সী-গাথা সেলাই তার উপর।

দুরঙ এ আমার, এই দুইটি রঙে,
আছে ছেয়ে অস্বর, আছে ছেয়ে অন্তর
দুরঙ এ আমার, এই দুইটি রঙে
রক্তিম প্রেম আর কৃষ্ণ ব্যথা জর্জর।

দমিত্রো পাব্লিচকো

Якби я втратив очі, Україно,
То зміг би жить, не бачачи ланів,
Поліських плес, подільських ясенів,
Дніпра, що стелить хвилі, наче сіно.

У глибині моїх темнот і снів
Твоя лунала б мова солов'їно;
Той світ, що ти дала мені у віно,
Від сьїва слова знову б заяснів.

А глухоти не зможу перенести,
Бо не вкладе ніхто в печальні жести
Шум Черемоша, співи солов'я,

Дивитися на радощі обнови,
Та материнської не чути мови –
Ото була б загибель – смерть моя.

Дмитро Павличко

যদি হারাই কভু দিঠি, হে মোর উক্রাইনা
রইব বেঁচে এ ধরায় না হেরি প্রান্তর,
পলেসের হৃদ আর পদিলের ধূসর,
নীপারের তরঙ্গের বিচালি-বিছানা।
তমিস্রালয় মোর স্বপ্নের গহ্বর,
পুলকিত হয়ে শোনে এ মধু-বচনা;
যে আলো দিয়েছিলে এ দুই নয়না
ভাষালোকে জ্বলে ওঠে তারা পুনর্বার।
শ্রুতিহীনতার ঘাত সহিতে যে নারি,
ইশারে ইঙ্গিতে শত বুঝিতে না পারি,
চেরিমোশা নদীর কলরোল, বুলবুল কাকলি।
না দেখিব যবে নব আবরণে আশা,
না শুনিব যবে এই মধু মাতৃভাষা ---
সে যে মৃত্যু মোর শেষ ধবংস-অন্তর্জলি।

দমিত্রো পাব্‌লিচ্‌কো

Потоп

Мені приснився потоп на Заході Європи.
Я був на літаку, дивися крізь вікно,
На сушу море йшло жорстоке, плоскостопе,
І проглядалося його рухливе дно.

Там рятувалися ще в аквалангах люди,
В будівлях, як вночі, горіли ще світла,
А я дивився, й знав, що ранку вже не буде,
Не зникне океан, як світанкова мла.

На східнім обрії падала сонця ватра,
І звідти йшов потоп, неначе Сатана
Відкрив Карпат врата і впали мури Шартра,
Рейхстагу куполи, собори Кельна й Брна.

Народи кинулись – хто в Альпи й Піренеї,
А хто на пагорби в плачах трудних молінь.
І вибивалися з-під хвиль хрести, як реї,
І понад водами з'явилась Божа тінь.

І голос був: «Умріть, сліпі і нетямущі!»
А я летів.... Куди? Здається, на Кавказ...
І бачив з літака – по дну в болотній гущі
Котився золотий паризький унітаз.

Дмитро Павличко
[19 червня 2010 р.]

প্রলয়

দুঃস্বপ্ন দেখি প্রলয় লেগেছে পশ্চিম ইউরোপে
বসে বিমানে দেখছি জানালা দিয়ে ভূমিতল।
মাটি জল একাকার কি ভয়ানক রূপে,
নীচে ভাসে মহাদেশের খণ্ড জমিতল।
ডুবুরীর শ্বাসযন্ত্র পরে সবে প্রাণটি বাঁচাতে,
রাত্রি ভয়ে, ঘরে ঘরে জ্বলে আছে আলো,
দেখি, বুঝি এ রাতের শেষ নেই প্রাতে,
যাবে না প্লাবন, উষ্মায় যাবে না রাত্রির কালো।
পুবের দিগন্তে নেভে সূর্যের উত্তপ্ত উনান,
সেথা হতে ধেয়ে আসে প্লাবন দৈত্য বহুভুজ
কার্পাথ খোলে দ্বার, ভাঙে লৌহ-দেওয়াল খানখান,
ভাঙে রাইখ্‌স্ট্যাগের, কোলনের, রুনোর গম্বুজ।
মানুষে পালায় - ওঠে আল্লে কিবা পিরেনীজে,
শীর্ষে চড়ে অশ্রুজলে প্রার্থনা করে প্রানপণ,
বিশুদ্ধ ক্রুশ নৌকার পাল, উঁকি দেয় চেউয়ের খাঁজে
জলের উপরে দেয় বিধাতা দর্শন।
ধ্বনি বলে: 'অন্ধ-মূর্খ সব, হোক তোদের বিলয়!'
আমি উড়ছি... কোথায়? হয়ত ককেশাস...
বিমান থেকে দেখি - পাঁকের বিবর্তে প্রলয়
ভাসে সোনার কমোড্‌ প্যারিসের বিলাস।

দমিত্রো পাব্‌লিচকো [১৯শে জুন, ২০১০]

লীনা কস্তেন্কা (Lina Kostenko) - জন্ম ১৯৩০ সালে

কিয়েভের মফস্বলে। ১৯৩৬ থেকে কিয়েভে। যুদ্ধবিধ্বস্ত শহরের পালানোর পথ, মাইন-ভরা মাঠে 'ব্যালো নাচ করে' বাঁচা, সুড়ঙ্গ বসে কল্পনা, লীনার প্রথম কবিতায় এসবের বিবৃতি আছে। পরে ষাটের দশকের মুখ্য প্রতিবাদী



কবিদের একজন, যাঁরা বিশ্বযুদ্ধ, স্ট্যালিনের দাপট কাটিয়ে মুক্ত পরিবেশের আহ্বান জানান। ১৯৬১ সাল থেকে এঁর অনেক লেখা দেশে ছাপা হত না, 'সাম্‌ইজদাত' বা গুপ্ত ভাবে এবং বিদেশে প্রকাশিত হত। কস্তেন্কার কবিতা সূক্ষ্মতা, কথার যাদু ও সৌন্দর্য্য পূর্ণ। সংকলনে 'শিব' কবিতাটিতে ভারতের প্রতি আকর্ষণ। সমাজে বিশেষ প্রভাব, তাই কবি স্বল্পভাষিনী হলেও দেশের প্রয়োজনে রাজনীতিবিদদের বাদ দিয়ে তাঁর ডাক পড়ে প্রায়। মানুষের কাছে আশি বছরের লীনা ইউক্রেনীয় সমাজের বিবেক। এটা অত্যুক্তি নয়।

ভাসিল সিমোনেন্কা - Vasyl Symonenko

(১৯৩৫-১৯৬৩) জন্ম পূর্ব ইউক্রেনে পল্‌তাতা জেলায় গরীব যোঁথখামারী চাষী পরিবারে। সাংবাদিকতা নিয়ে পড়ে পত্রিকায় কাজ করতেন। সৃষ্টিশীল যুব সংঘে যোগদান করে ষাটের দশকের কস্তেন্কা, দ্রাচ, স্কুসকে



নিয়ে স্ট্যালিনের কট্টরপন্থার বিরুদ্ধে অভিযান। ইউক্রেনে ঘুরে গুপ্ত কবর, অত্যাচারের চিহ্ন সংগ্রহ করেন তিনি। ১৯৬২ সালে কিয়েভের কাছে তিনটি স্থানে গণ কবর খুঁজে পেয়ে বিজ্ঞপ্তি দেন স্থানীয় কর্তৃপক্ষের কাছে। কিছুদিন পর কবির ওপর প্রচণ্ড হামলা হয়, কিডনিতে আঘাত লাগে, নিদারুণ অসুখে কবি মারা যান ১৯৬৩ সালে ২৮ বছর বয়সে। মৃত্যুর রহস্য উদ্ধার করা গরবাচভের সময়েও ছিল কঠিন। পরে পুলিশ অত্যাচারের কথা জানা যায় লেস তান্যুক নামে এক কবিবন্ধুর কাছ থেকে। দেহের কষ্টে নয়, বেশির ভাগ কবিতা ছাপা বারণে সারা জীবন বড় দুঃখ পেয়েছিলেন।

Мені відкрилась істина печальна:
життя зникає, як ріка Почайна.

Через віки, а то й через роки,
ріка вже стане спогадом ріки.

І тільки верби знатимуть старі:
киян хрестили в ній, а не в Дніпрі.

Ліна Костенко

উপনীত হই এক সত্যে কি করুণ,
জীবন যেন পোচাইনা নদীর প্রবহন।
শতাব্দী পেরিয়ে, আরো বহু বছরের পর,
নদী হয়ে যাবে শুধু স্মৃতি-নদী ভর।
জানবে প্রাচীনা প্রবীণা ঐ উইলোরা :
দ্বীপারের জলে নয়, হেথা খীষ্ট হত কিয়েভীরা।

লীনা কস্তুঙ্কে

По-Лицю-Дош

Великий воїн знищених племен,
в Америці, в минулому столітті,
мав найдивніше із усіх імен,
він мав ім'я нечуване у світі:

По-Лицю-Дош,
По-Лицю-Дош, По-Лицю-Дош!

Чи, не тому, що в нетрях він схищався
і від дощу, мабуть, не захищався, —

По-Лицю-Дош,
По-Лицю-Дош, По-Лицю-Дош!

Не Вовчий Плащ, не Бик і не Ведмідь,
не Зуб Мустанга, не Перо Орлине, —
він мав ім'я сумне і старовинне,
його лице тверде було, як мідь.

Він був високий, гордий і красивий,
із племені, котре не знало зради.
Тоді це плем'я називали «сіу»,
на мові злості щось близьке до «гади».

মুখে - বাদল - ধারা

হারিয়ে যাওয়া লুপ্ত যে প্রায় উপজাতির রাজা,
আমেরিকায় করত সে বাস গত শতাব্দীতে,
নামটি সে তার ছিল অতি উদ্ভট তরতাজা,
তেমন নামের আর নেই কেউ বিশাল পৃথিবীতে :

--- মুখে-বাদল-ধারা, মুখে-বাদল-ধারা, মুখে-বাদল-ধারা !

হয়ত বা সে বনের যত বিপদ যুঝে বুঝে,
পারেনি সে বাদল হতে রক্ষা পেতে নিজে, ---

--- মুখে-বাদল-ধারা, মুখে-বাদল-ধারা, মুখে-বাদল-ধারা !

নেকড়ে'র চাদর নয়, নয় ষাঁড়, নয় ভল্লুক,
বুনো ঘোড়ার দাঁত নয়, নয় ঈগল-পালক মায়া, ---
নামে যে তার প্রাচীনতা আর বেদনার ছায়া,
ধাতুর মত শক্ত, অনড়, তাম্রভ তার মুখ।

উচ্চ বিশাল ছিল সে যে, গর্বে রূপে ভরা,
উপজাতির জানত না কেউ বিশ্বাস-হনন করা
"সিউ" নামে অভিহিত বরাবরই এরা,
সভ্য ভাষার নিচে ফেলে পিষ্ট হত ওরা।

Він знав про це і не повів бровою.
Горіли джунглі, вилягав бамбук.
Його вуста були тугі, як лук,
натягнутий дзвінкою тятивою.

І ті орлині пера на чолі,
той знак звитяг його над ворогами...
Але було вже рідної землі —
ото лиш та, що зараз під ногами.

А завтра, завтра!.. Сивіє волосся.
Чужинські кроки б'ють у груди площ.
Та що ви? Ні. Сльоза?! Це вам здалося.
По-Лицю-Дощ...
По-Лицю-Дощ... По-Лицю-Дощ...

Ліна Костенко

জানত সে এই কথা, তবু তোলেনি হুকুটি।
দাবানলে জ্বলছে যে বন, ফাটিয়ে বাঁশ খান্ খান্।
সুদূত সঙ্কল্পে তার ঠোঁট দুটি টান্ টান্,
যেন তীর তেজে গুণ চড়ানো বাঁকা ধনুকটি।

ঈগল পাখির পালক মুকুট চড়িয়ে শিরোপর
চিহ্নে যে ঐ পরাজিত করল শত্রুদল
দাঁড়িয়ে থেকে দূত পায় আপন জমির 'পর ---
ঐ যে জমি --- জড়ায় যা তার এখন পদতল।

কাল কি হবে, কাল ! পঙ্ক রাশি কেশের।
পরদেশীর পদধ্বনি বাজে বুকে রোদনহারা।
ভাবছ কি যে? না না। অশ্রু?! ভুল এ তোমার মনের।
মুখে-বাদল-ধারা মুখে-বাদল-ধারা মুখে-বাদল-ধারা

লীনা কস্টেক্সে

Ти – Шіва. Ти – індуське божество.
Твої реальні обриси двояться,
Боюсь на Тебе подивитись, бо
Таких очей не можна не боятися.
Душа шукає слів як молитов.
До синіх вікон туляться дерева.
О, ця побожність, схожа на любов,
Очей повільних ласка мигдалева!
А очі ближніх – зведені курки,
І душі в нас беззахисні, як тири,
Ти думаєш, у Тебе дві руки,
А в Тебе дві, і ще, крім них, чотири.
У хмарах Кабінетної Нудьги
вони з надпліччя виростають хижо
і відливають бронзою жаги
і сріблом заворожених наближень.
Повзе гадюка в чорний телефон.
Мигтять людей столикі дублікати.
А я стою. І це мій марафон –
самій від себе безвісти тікати.
Ми розмовляєм сухо недарма,

তুমি - শিব, তুমি হিন্দু দেবতা
সদৃশ রূপ দ্বৈত হয় ভব,
যায় না তোমা পানে দৃষ্টিপাতা
ভীত করে আঁখিছয় তব।
চিত্ত খোঁজে শব্দ এ প্রার্থনা বেলা
ছুঁয়ে তরু এ নীল জানালা
দৈব মহিমা এ যেন, প্রেম-প্রেম খেলা
ঘোর বাদামী চোখে অনুরাগের মেলা।
প্রিয়-চোখ যেন গুন টানা ক্র-ধনুতে তীর
চিত্ত মোর শূন্যে রয়ে হয় অনিবার্য শিকার
তুমি ভাব, তোমার দুই বাহু বীর,
দ্বিভুজ, তবে আছে আরো চার।
লেখার ঘরের ক্লাস্তির মেঘে কুয়াশায়
স্কন্ধ ফুঁড়ে জাগে ওরা উদ্দাম
গলে রোঞ্জ-তামাটে পিপাসায়
করে রূপালী যাদুর সনে সঙ্গম।
কালো দূরভাষ যন্ত্র কালসাপ হয়ে যায়।
জ্বলে নেভে খল টেবিল, বসা মানুষেরা বেশ।
দাঁড়িয়ে থাকি কোন দীর্ঘ ম্যারাথনের আশায়
নিজের কাছ থেকে হব নিরুদ্দেশ
শুকনো কথা বৃথা করি না চর্চন

такі чужі. А Ти при всіх натомість
незримо обіймаєш чотирма
мою незриму світлу непритомність.
І дві мене, прозорі від безсонь,
на перехресті вічності й вівторка,
стоять під тінню бронзових долонь,
одна – Твоя, а друга – недоторка.

Ліна Костенко

Мене ізмалку люблять всі дерева,
і розуміє бузиновий Пан,
чому верба, від крапель кришталева,
мені сказала: "Здрастуй!" – крізь туман.
Чому ліси чекають мене знову,
на щит піднявши сонце і зорю.
Я їх люблю. Я знаю їхню мову.
Я з ними теж мовчанням говорю.

Ліна Костенко

অচেনার সাথে। তুমি এই বেলা
চতুর্ভুজে কর মোরে অদৃশ্য আলিঙ্গন
অচেতন সত্ত্বা মোর নির্মলা
আর দুটি হাত - নিঘূমে স্ফীত জাগরিত
চিরন্তনের সাথে মঙ্গলের মিলনের মোড়ের মাথায়
অপেক্ষা করে রোঞ্জ-করতলের ছায়ায় আশ্রিত
একটি - তোমার, অন্যটি নিষ্পর্শিত মায়ায়।

লীনা কস্তুঙ্কে

কোন শিশুকাল থেকে ভালোবাসে গাছেরা আমায়
বোধের উদয় জাগে সপ্তকাণ্ড কল্পতরুবরে
কেন যে উইলো, স্ফটিক তুহিন্-বিন্দু সিক্ত গায়
বলে ওঠে, "আছো কেমন?" কুয়াশার মায়া ভেদ ক'রে।
আবার বনানীরা কেন মোর প্রতীক্ষায় রত,
সূর্য্য-তারা-গ্রহদল করে আকাশের ঢাল অলংকৃত
ভালবাসি যে ওদের। বুঝি ওদের ভাষার কথা যত,
নীরবতা ভাষা মোর, কথা তাই নির্ভাষ সঙ্কেত।

লীনা কস্তুঙ্কে

Ти знаєш, що ти — людина?
Ти знаєш про це чи ні?
Усмішка твоя — єдина,
Мука твоя — єдина,
Очі твої — одні.

Більше тебе не буде.
Завтра на цій землі
Інші ходитимуть люди,
Інші кохатимуть люди —
Добрі, ласкаві й злі.

Сьогодні усе для тебе —
Озера, гаї, степи.
І жити спішити треба,
Кохати спішити треба —
Гляди ж не проспи!

Бо ти на землі — людина,
І хочеш того чи ні —
Усмішка твоя — єдина,
Мука твоя — єдина,
Очі твої — одні.

Василь Симоненко
[16.XI.1962]

জান কি তুমি মানব
জান কি এ সত্য তাই?
হাসি তোমার --- একমেব
ব্যথা তোমার --- একমেব
দিষ্টি তোমার --- এক তাই।
রবে না তুমি আর
আগামীর মাটিতে বসুধার
হবে অপর জনের যাওয়া-আসা
রবে অপর জনের ভালবাসা
দয়ার, আদরের কিবা ক্রুরতার।
আজ সব তোর তরে ---
হৃদ, নদ, স্তেপ ভরে।
ত্বরা এ জীবন-যাপনে,
ত্বরা কর প্রেম মধুপানে ---
দেখ চেয়ে, থেকো না নিদ্রাঘোরে!
মাটির উপরে তুমি --- মানব,
চাহ তুমি কিবা চাহ নাই ---
হাসি তোমার --- একমেব
দিষ্টি তোমার --- একতাই।

ভাসিল্‌ সিমোনেস্কো

[১৬ই নভেম্বর, ১৯৬২]

বরিস্ ওলিইনিক্ (Borys Oliynyk) - জন্ম ১৯৩৫

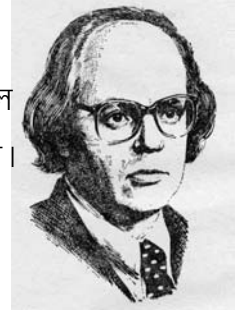
সালে পূর্ব ইউক্রেনের পল্‌তাবা জেলায়। মাত্র পঞ্চম শ্রেণীর ছাত্রাবস্থায় প্রথম কবিতা লেখা। তারপর কিয়েভ বিশ্ববিদ্যালয়ে সাংবাদিকতা নিয়ে পড়া, পরে পেশায় প্রবেশ। তার সঙ্গে সাধারণ মানুষদের নিয়ে কবিতার নেশা-, চাষী, গ্রামের শিক্ষিকা, যুদ্ধের সৈন্য ইত্যাদি।



কবি বরাবরই সামাজিক কাজে সক্রিয়, সোভিয়েত দেশের ও স্বাধীন ইউক্রেনের সংসদে সদস্য ছিলেন। গত ২০০৪ সাল পর্যন্ত ছিলেন কম্যুনিষ্ট পার্টির সদস্য, বের হয়ে যান ইউক্রেনের কমলা বিপ্লব সংক্রান্তে মতভেদে। শান্তিসংঘের সভাপতি চের্নোবিল দুর্ঘটনার পর লেখেন সাত নামে কবিতা, সংকলনে তার অংশ অন্তর্ভুক্ত। ইউক্রেনীয় কবিতার কথার যাদুকর এই কবি, উপমা ও রূপকে ঐর তুলনা নেই। কম্যুনিষ্ট হলেও কবিতা আধ্যাত্মিকতা ও দর্শনে সিঞ্চিত।

ইভান ড্রাচ্ (Ivan Drach)- জন্ম ১৯৩৬ কিয়েভ

জেলায় মৌখখামারের কর্মচারীর পরিবারে। ১৯৫৮ সালে বিশ্ববিদ্যালয় থেকে আদর্শগত অনৈক্যের জন্য বহিস্কৃত। পরে এক্সটার্নাল ছাত্র হয়ে শিক্ষালাভ। ষাটের দশকের প্রজন্মের প্রতিবাদের পর ১৯৬৬ থেকে সরকারের সঙ্গে বিশেষ দ্বন্দ্ব যেতেন না। প্রচুর বই প্রকাশিত হয়েছে।



ড্রাচের কবিতায় ইউক্রেনের লোক সংস্কৃতি, আচার ইত্যাদির গভীর প্রকাশ দেখা যায়। কবি ১৯৮৯ র পর থেকে সক্রিয় রাজনীতিতে আছেন, 'রুখ' নামে প্রথম রাজনৈতিক দলটির সহ-সভাপতি ছিলেন। বহুবার সংসদের সদস্য হয়েছেন। এখনও তিনি রাষ্ট্রপতির সামাজিক ও মানবিক কমিশনের সদস্য। সংকলনের অন্তর্ভুক্ত কবিতা 'ডানা' একটি অপূর্ব সৃষ্টি। পার্থিব ও অপার্থিব বিষয়ের দ্বন্দ্ব ও সামাজিক সমস্যার প্রতিফলন।

ভাসিল স্তুস্ (১৯৩৮-১৯৮৫) **Vasyl Stus** - ইউক্রেনীয়

প্রতিবাদের প্রবাদপুরুষ। জন্ম পশ্চিম ইউক্রেনে ভিল্লিংসাতে হলেও পিতামাতার সঙ্গে পূর্ব ইউক্রেনের কয়লাখনি অঞ্চলে দনেৎস্কে (তৎকালীন নাম স্ট্যালিনো) মানুষ হয়েছেন। ১৯৫৯ সালে প্রথম কবিতায় দনেৎস্কে রক্ষ শিল্পাঞ্চলের জীবনের



কথা। ১৯৬৫ সালে সেগেই পরজানভের চলচ্চিত্র 'বিস্মৃত পূর্বপুরুষদের ছায়া'র প্রথম প্রদর্শনের দিনে বন্ধুদের গ্রেপ্তারের বিরুদ্ধে প্রতিবাদ। ফলে ভাল গবেষক ও গ্যেটের দক্ষ অনুবাদক স্তুস সাহিত্য ইনস্টিটিউট থেকে বহিস্কৃত হন। বই প্রকাশ নিষেধ বলে নানা শ্রমে জীবনযাপন হয়। ১৯৭২-এ কম্যুনিষ্ট পার্টিতে লিখিত প্রতিবাদ। এবার ৮ বছরের জেল - সুদূর মর্দোভিয়া ও মাগাদানে। ১৯৭৯এ ফিরে কারখানায় শ্রমিকের কাজ করতেন। তখন হেলসিঙ্কি মানবাধিকার সংঘে যোগ দেন, ১৯৮০-তে আরো ১০ বছরের জেল হয়। ১৯৮৩র জানুয়ারীতে কবিতা পাচারের অপরাধে অধিক শাস্তি একক কামরায়। এঁর ৩০০ কবিতা ধ্বংস করা হয়। ১৯৮৫র ২৮শে অগাস্ট আবার একক কামরা। ভগ্নস্বাস্থ্য স্তুস অনশন শুরু করেন। ৩-৪ সেপ্টেম্বরে রাতে প্রাণ হারান। মৃত স্তুস প্রতিবাদ-সাহিত্যে চিরজীবী।

ইহর্ কালিনেৎস্ (Ihor Kalynets) - জন্ম ১৯৩৯ সালে

লভোভ জেলায়, সেখানেই পড়াশুনা ও কবিজীবন।

ষাটের দশকের শেষে প্রতিবাদী কবি। ১৯৭২-১৯৮১ সালে

উরালে ও সাইবেরিয়ার বৈকাল হ্রদ অঞ্চলে শ্রম শিবিরে

বন্দী। গ্রেপ্তারের আগে নয়টি বইয়ের মধ্যে একটি ঠিকমত

প্রকাশ হয়েছিল। অন্য সব হাতে-হাতে ফিরত। ১৯৮১র পর আর কবিতা

লেখেন না। বন্দী অবস্থাতে কামার ও লোহার কাজ করেছেন, তবে লেখা

থামে নি। আশ্চর্যভাবে সব লেখা যত্ন করে রাখতে পেরেছেন। তারই চয়ন,

সংকলন ও এক পত্রিকায় রচনা ইত্যাদি লেখার কাজে ব্যস্ত থাকেন।



Уривок з поеми "Сім"

ВІКТОРУ КІБЕНКУ
МИКОЛІ ВАЩУКУ
ВАСИЛЮ ІГНАТЕНКУ
МИКОЛІ ТИТЕНКУ
ВОЛОДИМИРУ ТИЩУРІ
ВОЛОДИМИРУ ПРАВИКУ
(Мов з козацького реєстру,
Чи не правда?)...
І всі шестеро – пожежники,
Тільки сьомий,
Володимир Шевченко, –
Кінорежисер...
Де ви тепер,
матерів своїх діти,
Колисаєте сон?
Вдарило в очі світло,
Ясніше тисячі сонць.

"সাত" নামক কবিতার একটি অংশ

ভিক্টর কিবেঙ্কো

মিকোলা ভাস্কুক

ভাসিল্ ইগ্নাতেঙ্কো

মিকোলা তিতেঙ্কো

ভলদিমির্ তিশ্চুরা

ভলদিমির্ প্রাভিক্

(যেন কসাক বাহিনীর হাজিরা পত্র,

তাই না ?)

এই সব ছয় জনা --- অগ্নি-নিবারক বাহিনীর,

শুধু সপ্তম,

ভলদিমির্ শেভ্চেঙ্কো, ---

চলচ্চিত্র পরিচালক

আজ তোমরা কোথায়

মায়ের বীর সন্তান,

আছ চিরঘুমের কোলে শুয়ে ?

..... চোখে লাগল রশ্মির আঘাত,

সহস্র সূর্যের থেকেও জ্যোতির্ময়।

Струсонуло цілим світом.
В Страхоліссі передсвітом
Брязнув дуб тисячолітній –
Охнула земля.
Тільки – пилу мертва хмарка,
та ще крук зловтішно каркнув:
– От і всі кінці,
Хлопці-молодці!
Самоїли дух і тіло,
Доки і корінь переїли! –
І регоче, гад,
Аж мороз – до п'ят.

Дзьоб націливши, мов жерло,
Карка: – Ну, нарешті зжерли –
Та не просто дуб
На криничний зруб,
А тисячолітній символ,
Під яким щодня місили
Для дітей казки:
«Ми, бач, козаки!»

আঘাতে কাঁপন পৃথিবীময়।
 ভয়াল বনে ভোরের বেলায়
 বনঝনালো বছর হাজারী ওক ---
 মাটি কাঁদল হয় হয়।
 শুধু --- ধূলোভরা মৃত মেঘ,
 তার উপর দাঁড়াকের অলক্ষুণে ডাক :
 --- পেলে কৃতকর্মের ফল,
 সাবাস ছেলের দল !
 দেহ আত্মা করে আপন চর্ষণ,
 পৌঁছে গেলে শিকড়-দেশের গহন ! ---
 তার সর্পকুটিল ব্যঙ্গ অট্টহাস,
 পায়ের নিচে জমায় বরফ রাশ।

 বাঁকানো ছিপ যেমন তীক্ষ্ণ ঠোঁটে
 কা কা কর্কশ: শেষ পর্যন্ত করলে গ্রাস ---
 নয় সে ওক এক অতি সামান্য
 কাঠের কুটো কুয়ো বাঁধার জন্য,
 বছর হাজারী এক চিহ্ন,
 যার তলায় রোজ হত মন্ডন
 শিশুর তরে রূপকথা কাহন :
 "দেখ, দেখ, বীর কসাক মোরা !"

А тепер вже діло часу –
Розжувать і стовбур в масу,
Щоб і знак погиб,
І – вперед, углиб:
Позаяк струбили жертву,
Саме час наспів
Одне одного дожерти
Під застольний спів.

Слава богу, зуби добрі
(Як-не-як, а й корінь дроблять):
На здоров'я – їж,
Тільки чимскоріш,
Щоб, дивися, кляте плем'я
Не взялося їсти землю... –
І регоче, гад,
Аж мороз, до п'ят.

– Дай-но, – карка, – світе, сили
Дожувать їм врешті символ

নামল প্রহর করবে বিচার দন্ড ---

চিবিয়ে জাবর কাণ্ড হবে পিণ্ড,

থাকবে নাকো চিহ্ন,

তাই --- সময় অগ্রগণ্য :

কেননা জুটেছে শিকার

হয়েছে সময় আজি

হ'তে তার ভাগীদার

একে অপরকে গিলতে রাজী।

বিধির দয়ায় শানিত ঐ দাঁত

(যেমন তেমন নয়কো, খণ্ড খণ্ড কাটে শিকড়):

প্রাণটি ভ'রে --- করো গ্রাস,

শীঘ্র করো --- ব্যস্ত প্রয়াস,

দেখ, যেন এই অভিশপ্ত জাতে

উদ্যত না হয় ধরিত্রীকে গিলতে ---

তার সর্পকুটিল ব্যঙ্গ অট্টহাস

পায়ের নিচে জমায় বরফ রাশ।

--- শক্তি দাও --- কর্কশ রব

ডাকে --- এদের

সকল চিহ্ন, স্মৃতি করতে নিশ্চিহ্ন

І себе самих – без солі,
Щоб земля їх не носила.
Порятуй нас, доле,
Від цієї поторочі,
Хай самих себе поточать
Шашіллю до пір'я,
Щоб на цьому світі
Хоч zostались звірі!

Я кажу йому:

– Чи так же

Завинився рід наш, враже!
Люди ж ми таки.
Ну... не козаки,
Але щось і ми робили,
А не тільки пхали рило
До масних корит.

Щось і ми намудрували ...
А поглянь: летить
За космічні перевали

ধ্বংস করতে নিজেদের --- লবন ভিন্ন,
পৃথিবীকে করতে যেন না হয় বহন ভার
হে নিয়তি, রক্ষা কর মোদের
হাত হতে এই দৈত্যের,
যা হয় ওদের হোক
পদ হ'তে মস্তক
শুধু বিশাল বিশ্ব ভবে
পশু জগত বেঁচে রবে!

বলি আমি:

--- এমন কি গর্হিত
কাজ করেছে মানব জাতি, প্রতিদ্বন্দ্বী তুমি ভীত!
আমরাও তো জীব পৃথিবীর
হতে না পারি কসাক বীর,
করেছি বিবিধ গুরু কাজ,
থাকিনি শুধু ডুবিয়ে মুখ
ঘি-ভরা ঐ গামলা সুখ।
কাজের কাজ করেছি আমরাও
ঐ যে দেখ: উড়ন্ত
মহাকাশের শূন্যতা ফেলে

Син землі.

Живий.

Не робот!

Він же, гад, поляскав чобіт,
В зуби –

сигарету.

Ріже:

– В космос чи до чорта,
Тільки – чимскоріше,
щоби

Вас змело з планети,
Як страшні хвороби!

Ваші чола розпад мітить,
Ви себе як біовид
Вичерпали з тої миті,
Коли в генах,

як бандити,

Скальпелем лишили слід.

Коли гуси («гуси білі-і-і!»)
Спритний геноінженер
Перевів з краси

в дебілів, –

এ মাটির ছেলে

জীবন্ত।

নয় রোবোট যন্ত্র !

তার সর্পকুটিল ভাব --- যেন জুতোয় পদ দলন,
যেন দাঁতের ফাঁকে বিদ্রুপ সিগারেট ---

জাগায় শিহরণ।

শাণিত গলায় বলে:

--- মহাশূন্যে কিবা জাহান্নামে,

যাও চলে, যাও দ্রুত না থেমে,

এ বিশ্ব থেকে হোক তোমাদের অবসান

যেন মহামারী এক রোগ জীবাণু সমান।

প্রলয়ের কথা তোমাদের কপাল-লিখন,

প্রাণী হিসাবে তোমাদের জীবন-যাপন

হয়েছে হয়েছে তবে অর্থহীন,

যবে ঐ জিন্-এর মালায়,

ডাকাত-সমান,

লাগালে ছুরিকাঘাত।

যবে ঐ হাঁস ("শ্বেত হংস দল!")

পটু জিন-ইঞ্জিনিয়ারের দক্ষতায়

হলো বয়লার অতিহাঁস

করে সৌন্দর্যেরে পরিহাস, ---

І поперли в світ наш білий
Орди тлустих ненажер,
Коли ти в зерно природи
Увігнав по лікоть шприц,
Щоб нагодувать народи
Хлібом збочених пшениць.

Шо ж, возрадуйся тепер:

М'ясо

 з вилупків дебелих,
Хліб із хворого зерна
Доти їли,
що в дебілів
З'їхали самі сповна.

– Ну, – кажу, – так це знедавна:
Гени, коди, ДНК..
А раніш велося справно,
Від природного струмка.
– Що?! – він з подиву аж звівся. –

দেখল জগতের পবিত্র আলো
ঝাঁক ঝাঁক মাংসপিণ্ড স্থূল,
যবে প্রকৃতির বীজের হৃদয়
করলে সূচবিদ্ধ বেদনায়
মানব ক্ষুধা যাতে মেটানো হয়
ভ্রষ্ট গমের রুটির ময়দায়।

করবে কি আর, হাস খুশির হাসি:
ঐ অতিকায়, চর্ম হতে যেন

ফেটে বেরিয়ে আসা মাংস,
অস্বাভাবিক অসুস্থ ঐ শস্য-শাঁস
খেয়ে জীবন নির্ধারণ

হলো পর্যাপ্ত তখন
যবে হল সমস্ত জাতির বুদ্ধিনাশ।

থাম থাম, --- বলি, --- এ তো সেদিনের কথা বটে :
জিন্, কোড্, ডি.এন্.কে
আগে তো চলত সব প্রচলিত পথে,
প্রকৃতির নিয়মের বশীকরণ-কারকে।

--- কি ?! --- আশ্চর্যের আকাশ থেকে পড়ল সে
তখন ---

সব কাজ তোমাদের সকল মনন
কখনও নয়

সন্দেহ বিহন ! ---

মহাসৃষ্টির বহু আগে ঐ আদি কালের
সর্পিল কুটিল চিহ্ন

অমানবিক পিশাচের

শূণ্যতার আশ্বে-পৃশ্বে ছিল লীন !

চাও কি ধারাবাহিক বিবরণ?

দেখ! করি আবরণ বিমোচন।

বরিস্ ওলিইনিক্

Анатомія літа

Купається в сонці трава,
Купається сонце в траві,
А на твоїх на бровах
Ходить вітер на голові.
А на твоїх на вустах
Сонячна смута бринить,
Вітер навшпиньки став,
Вирости хоче на мить.
А кострубаті крики,
А кострубаті сосни.
Навчилися бути дикими
Ще з минулої осені.
Дивно все. Дивно прозоро.
Скільки вам, світе, літ?
Це ви ж в сповитку од вчора –
Мій найюніший плід!
Так прагнеться вірити вам,
Бо люди у вірі живі.,
Купається в сонці трава,
Купається сонце в траві.

Іван Драч

গ্রীষ্মের বীক্ষণ

ঘাসেরা রত সূর্য্য স্নানে,
সূর্য্য রত ঘাস স্নানে,
তোমার ক্রধনুর উপর দিয়ে
শিয়র 'পরে বাতাস আঘাত হানে।
তোমার মুখের উপর দিয়ে
সূর্য্যরেখার সপ্তসুরের বঙ্কার,
বাতাস দাঁড়ায় পায়ের আঙুলে ভর দিয়ে
এক পলকের তরে যে তার বড় হওয়ার সাধ
আর তীর চীৎকার ধ্বনি
এই তীক্ষ্ণ পাইন বনানী
উদ্দাম বন্য হতে শিখেছে
বিগত হেমন্তের সূত্র টানি।
অদ্ভুত সব। অদ্ভুত স্ফটিকস্বচ্ছ।
আলো, তোমার বয়স কত ?
এ যে তুমি নতুন বসন প'রে গতকালের ---
মম নবীনতম ফল সদ্যজাত !
কি যে এ উৎসাহে করি বিশ্বাস তোমায়,
বিশ্বাসে এই মানুষ বাঁচতে জানে
ঘাসেরা রত সূর্য্য স্নানে
সূর্য্য রত ঘাস স্নানে।

ইভান্‌ দ্রাচ

Крила

(Новорічна балада)

Через ліс-переліс,
через море навкіс
Новий рік для людей подарунки ніс:
Кому — шапку смушеву,
кому — люльку дешеву,
Кому — модерні кастети,
кому — фотонні ракети,
Кому — солі до бараболі,
кому — три снопи вітру в полі,
Кому — пушок на рило,
а дядькові Кирилові — крила.

Був день як день, і раптом — непорядок,
Куфайку з-під лопаток — як ножем прошило.
Пробивши вату, зарядили радо,
На сонці закипіли сині крила.

Голодні небом, випростались туго,
Ковтали з неба синє мерехтіння,
А в дядька в серці — туга,
А в дядька в серці — тіні.

ডানা (নববর্ষের গাথা)

পেরিয়ে বন-বনাস্তর

আর অতল সাগর

সবার তরে উপহার নিয়ে আসে নতুন বছর;

কাউকে --- টুপি পশমমুখো

কাউকে --- সস্তা তামাক হুকো,

কাউকে --- লৌহদস্তানা আধুনিক

কাউকে --- রকেট ফোটোনিক,

কাউকে --- আলুর তরে লবণ,

কাউকে --- ক্ষেতে তিন আঁটি পবন,

কাউকে --- সুখের নরম গোঁফথানা

আর কিরিল খুড়োর তরে --- ডানা।

দিনের মত দিনটি ছিল হঠাৎ --- বেসামালে,

ছুরির মত কাঁধের নিচে কোটের শামিয়ানা

ভেদটি করে তুলো বাইরে এসে নিজের খেয়ালে,

সূর্য্যতাপে ফুটতে থাকে নীল ঐ দুই ডানা।

আকাশ-তৃষায় আতুর হয়ে টান-টান এই কালে,

গিলতে থাকে গোগ্রাসে নীল আকাশ-সীমানা,

আর খুড়োর হৃদয় থেকে থেকে --- এই বেদনায় জ্বলে,

তাই খুড়োর মনে জেগে ওঠে --- ছায়া সুখহীনা।

(Кому — долю багряну,
кому — сонце з туману,
Кому — перса дівочі,
кому — смерть серед ночі,
Щоб тебе доля побила,
а Кирилові, прости Господи, —
крила.)

Жінка голосила: «Люди як люди.
їм доля маслом губи змастила.
Кому — валянки,
кому — мед од простуди,
Кому — жом у господу,
а цьому гаспиду,
прости Господи, — крила?!»

Так Кирило до тями брів,
І, щоб мати якусь свободу,
Сокиру брусом задобрив,
І крила обтяв об колоду.
Та коли захлинались сичі,
Насміхалися зорі з Кирила

কাউকে --- সাফল্য লাল ভবী,
কাউকে --- কুয়াশা-কাটা রবি
কাউকে --- কুমারীর ঐ স্তন
কাউকে --- রাত্রি মাঝে মরণ।
যেন নিয়তির এ পরিহাসপনা
কিরিলের এই, দোহাই প্রভু, ---
ডানা / ।

পত্নী বলেন: "যেমন মানুষ তেমন।
মাখন লাগায় তাদের ঠোঁটে নিয়তি সবক্ষণা।
কাউকে --- পশম জুতা শুধু,
কাউকে --- রোগ-নিরাময় মধু,
কাউকে --- নীড় ভরা গুড়-পাটালি ঢেকে
আর সাপ-কুটিল হতভাগাকে
দোহাই প্রভু, ---
ডানা?!"

শুনে শুনে নানান কথা কানটি ঝালাপালা,
বিহিত কিছু করতে হবে এই কথাটি ভেবে,
পাথরে শান দিয়ে কুঠার করল ধারওয়ালা,
ডানা জোড়া কাটল কিরিল নিঃশব্দে নীরবে।
গভীর নিশায় রাতের পাখি গাইল যখন গান,
তারার দল উঠল হেসে কিরিল পানে চেয়ে,

І, пробивши сорочку вночі,
Знов кипіли пружинисті крила.
Та Кирило з сокирою жив,
На крилах навіть розжився —
Крилами хату вшив,
Крилами обгородився.
А ті крила розкрави поети,
Щоб їх муза була не безкрила,
На ті крила молились естети,
І снилося небо порубаним
крилам.

(Кому — нові ворота,
кому — ширшого рота,
Кому — сонце в кишеню,
кому — дулю дешеvu,
Щоб тебе доля побила,
а Кирилові — не пощастить же
отак чоловікові! — крила.)

Іван Драч

জামার পর্দা ভেদ ক'রে জাগল যে টান-টান,
আবার আর এক ডানার জোড়া উঠল গজিয়ে।
কুঠার দিয়ে কাটত ডানা করত জীবন-ধারণ,
ডানার জোরে কিরিলেরই ভাগ্য খোলে এবার।
ডানা পেতে নতুন করে হল কুটীর ছাওন,
ডানা দিয়েই তৈরী হল নতুন প্রাচীর সেবার।
চুপি চুপি করত চুরি কবিরা এই ডানা,
ডানাবিহীন না হয় যাতে কল্পনারা যত,
সুন্দর-পূজারী ডানার করত উপাসনা,
ছিন্ন ডানারা আকাশ-স্বপ্নে বিভোর হত তত।

/ কাউকে --- নতুন দুয়ার সুখ,
কাউকে --- গোগ্রাসী ঐ মুখ,
কাউকে --- পকেট-ভরা সূর্য্য তাজা,
কাউকে --- লবডঙ্গার সাজা,
যেন নিয়তির এ পরিহাসপনা,
এই কিরিলকে --- যায় না দেওয়া
পার্থিব সুখ ! --- ডানা /।

ইভান্ দ্রাচ।

Як добре те, що смерті не боюсь я
І не питаю, чи важкий мій хрест,
Що перед вами, судді, не клонюся
В передчутті недовідомих верств,
Що жив, любив і не набрався скверни,
Ненависті, прокльону, каяття.
Народе мій, до тебе я ще верну,
Як в смерті обернуся до життя
Своїм стражданням і незлим обличчям.
Як син, тобі доземно уклонюсь
І чесно гляну в чесні твої вічі
І в смерті з рідним краєм поріднюсь.

Василь Стус

মৃত্যুভয় নেই মোর, কী শুভ এ লগন অতি
প্রশ্ন করি না, ক্রুশ মোর লঘু কিবা ভারী,
করি না নমিত শির তোমার সমীপে বিচারপতি
অজানা প্রান্তরের ক্রান্তদর্শিতায় অনুভবী
হল জীবন-যাপন, ছিল প্রেম, হয় নি সঞ্চিত
ঘণার বিষের-বিন্দু, অভিশাপ, অথবা সন্তাপ।
জনগণ প্রিয় মোর, আসব ফিরে তব কাছে মিত,
মৃত্যুতে উঠব জেগে জীবনে অপরূপ
বেদনা-ব্যথিত আর নিষ্কলুষ মুখছবি নিয়ে।
পুত্র হ'য়ে বসুধায়, তোমায় প্রণামে হবে সর্বাঙ্গ নমিত
তোমার নিষ্পাপ নির্মল চোখে চাইব নিষ্পাপে
আত্মীয়-মিলন হবে মাতৃভূমি সাথে মোর এ মৃত্যু সহিত।

ভাসিল্ স্কুস্

Дерева, вітром підбиті,
Пещені літом і сонцем,
Піднявши вгору долоні,
Пнуться до неба.
Зайшлися
У ритуальному танці.
Я заздрю вам, тривожні дерева,
Із добрими дитячими очима!
Ви кожен рік оновлюєтесь. Я ж
До цього тільки прагну...
Людино! коли дерево сторуко
Голубить небо, вітер і весну,
І день, і ніч, і вечори, і ранки,
Не забувай, що дві твої руки
Не можуть мати спокою ніколи.

Василь Стус

গাছেরা রয়ে সমীরণ আলিঙ্গনে,
সূর্যের আদরে হয়ে গ্রীষ্মে লালিত
হাতশাখা তবু তোলে ঐ উর্দ্ধপানে,
আকাশ-আকাঙ্ক্ষা তার অমিত।
মেতে ওঠে যেন কোন
উৎসবে, আর কোন নৃত্য-উপাসনে।
ঈর্ষ্যাগুণে দহি আমি, অশান্ত আকাঙ্ক্ষী-গাছ,
দেখে শিশুর নির্মল চোখ মেলে!
প্রতি বছরে তোমাদের নবজন্ম হয়।
আমার আকাঙ্ক্ষা অশেষ শুধু এর তরে.....
হে মানব! শতহাত মেলে যবে গাছ
আকাশকে করে আরো নীল, বসন্ত বাতাসে,
দিবস-রজনী সন্ধ্যা উষার প্রতি ক্ষণে
বিস্মৃত হ'য়ো না, তোমার এ দু হাত তখন
পারে না থাকতে অলস, পারে না কখনো।

ভাসিল্ স্কুস্

Вулиця

Кохана, ось плече моє зіпертись,
Солодкий твій тягар, що вмерти можна.
Цю вулицю побачила ти вперше,
Цю вулицю побачити сміє не кожен.

Ця вулиця злодіїв і ворожбитів,
у їхній цех вписатись маєм змогу:
мене ти вкрала від всього світу,
себе заворожив я від себе самого.

Чекав на тебе вічність, цілий тиждень,
зустрінемось небавом – через вічність.
Чи буду той я, тою будеш ти ще,
чи буде за вуглом злодійкуватий місяць?

Ігор Калинець

পথ

প্রিয়তমা, আমার এই কাঁধে দাও ভার,
মিষ্টি তোমার এ ভারে, মরতেও কত সুখ।
এ পথের সাথে হল তোমার প্রথম পরিচয়,
যার তার এ পথ দেখতে হয় না সাহস।

পথভ্রষ্ট অনাচারের আজব যাদুকরী এ পথে,
আমাদেরও স্থান আছে মিলে মিশে বিলীন হওয়ার :
এই সব পৃথিবী থেকে কেড়ে নিয়েছ আমায় তুমি,
মায়াবী যাদুর ঘোরে আমারই কাছে লুকোয় আমার আমি।

তোমার জন্য অপেক্ষা আমার অনন্ত --- পুরো এক সপ্তাহ,
দেখা হবে কয়েক দণ্ড পরে --- পেরিয়ে এ অনন্ত।
হব কি আমি অনন্ত, তুমিও হবে কি তাই,
নাকি হবে তাই কোণঠাসা ঐ চোরের মত বাঁকা চাঁদ?

ইহর্ কালিনোয়স্

ল্যুদমীলা স্কীর্দা (Lyudmyla Skyrda) - জন্ম ১৯৪৫

সালে মধ্য ইউক্রেনের কিরভোগ্রাদ জেলায় এক চাকুরীজীবী পরিবারে। কিয়েভ বিশ্ববিদ্যালয়ে পাঠ, গবেষণা, অধ্যাপনা, তার সঙ্গে কবিজীবন। কূটনীতিবিদ স্বামী ইউরী কস্কেঙ্কোর সঙ্গে পৃথিবীর বিভিন্ন দেশে অবস্থানের সময় ইউক্রেনের ইতিহাস ও সাহিত্য প্রচার



তার সঙ্গে মাতৃভাষায় নিজের কবিতা লেখা স্কীর্দার পাথেয় হয়েছে। তাঁর কবিতার ভাষা ইউক্রেনীয় হলেও অস্ট্রিয়া, জার্মানী, ইটালি থেকে শুরু করে সংযুক্ত আরব এমিরেটস, গ্রীস, কোরিয়া, ও জাপানের মত ভিন্ন দেশের রূপ, রস ও গন্ধে ভরা এবং এই ভাষাশুলিতে অনুদিত। এখন তিনি চীনে ইউক্রেনের রাষ্ট্রদূতের সহধর্মিনী, চীনা ভাষাতেও এঁর কবিতা প্রকাশিত হয়েছে।

লিওনিদ কিসেলিওভ (Leonid Kyselyov) - জন্ম

১৯৪৬ সালে কিয়েভে রুশী পরিবারে। পিতা লেখক। মাত্র ২২ বছর বয়সে লিউকেমিয়ায় জীবনাবসান। ১৯৫৯ সালে কবিতায় হাতেখড়ি, লেখক ভ্লাদিমির তভাদোভস্কির দায়িত্বে দশম শ্রেণীর ছাত্র লিওনিদের কবিতা প্রকাশ হয় প্রথম। লিখতেন রুশ ভাষায়।



লিওনিদ ইউক্রেনীয় সাহিত্যে অমর হয়ে আছেন। প্রথম লেখা শুরু করেন রুশ ভাষায়। জীবনের শেষ ১৯৬৮ বছরে শুধু ইউক্রেনীয় ভাষায় কবিতা লিখেছেন। অনুপ্রেরণা পেয়েছেন পিতার কাছ থেকে। অসুস্থ লিওনিদ লিখেছিলেন, ‘অতল গহ্বরের প্রান্তে দাঁড়িয়ে মনকষ্টে অনুভব করলাম, এ জগতে ইউক্রেনীয় কবিতা ও গান ছাড়া আর কিছু নেই’। লিওনিদকে ইউক্রেনীয় আধুনিক সাহিত্যের কীটস বা লেরমন্টভ বলা হয়। সমস্ত পৃথিবীতে ইউক্রেনীয় ভাষা ও সাহিত্য পাঠে কিসেলিওভ অবশ্য পাঠ্য।

Цвітіння мить, кохання мить, мить щастя.
А решта? Це турботи і напасті,
Суцільна проза чи експеримент.
Що ж в цім житті нас міцно так тримає?
Не хочемо ні пекла, а ні раю,
Аби продовжить день свій хоч на мент.

Людмила Скирда

ফুল ফোটার ক্ষণ, প্রেমের অনুক্ষণ, বিন্দু ক্ষণ সুখ,
আর সব? এ হল ব্যস্ততা, ব্যর্থতা প্রতিদিন
পরীক্ষা নিরীক্ষা কিংবা গদ্যের জঙ্গল।
কিসের টানে বেঁচে আছে এ জীবন?
চাই না নরক-স্বর্গ, যাক্ য়েদিকে চায় দু-চোখ,
দাও বাঁচতে এই ক্ষণ, এই মুহূর্ত, এই পল।

ল্যুদমীলা স্কীর্দা

Півроку ні рядочка,
Ані слова.
Мовчить душа. Вона сумна й сурова
Чи перебува у летаргічнім сні.
А може, під крилом цієї тиші
Вона росте, мов древо, вище й вище,
Щоб вибухнуть плодами восени.

Людмила Скирда

এক কলমও লেখা নেই ছয় মাস,
নেই শব্দের আশ্বাস
বিরত মনন, মন্ত্রর গস্তীর মন
গভীর কোন কালনিদ্রায় মগন
কিংবা করে নিঃশব্দের ডানায় উত্তরণ
বড় হয়, উচ্ছে ওঠে, তরুর মতন
ফলভারে হেমন্তে তার হবে বিস্ফোটন।

ল্যুদমীলা স্কীর্দা

Ти полинеш сиза, наче птах.
Твій полинний присмак вабить серце.
Ти по липню вибіжиш у серпень,
мов по линві, бгаючи мій страх.

Питиму розлуку, як вино.
І колись, блідим зимовим ранком,
Чорний птах, сумний, немов прочанка,
Тихо сяде на моє вікно.

Леонід Кисельов
[1968]

ঘন নীল বিদায় তোমার পাখির মতন।
হঠাৎ উড়ন-স্বাদে হৃদয়কে দাও হাতছানি।
আষাঢ় না হ'তে শেষ শ্রাবণে ঝাঁপন,
দড়ির উপর হাঁটা পায়ে, ক'রে মোর শঙ্কা বুনন।

বিচ্ছেদ-মদিরা করি পান নিঙাড়ি হৃদয়
শীতের মলিন কোন সকাল বেলায়
কালো পাখি, বেদনার তীর্থযাত্রী হ'য়ে
উড়ে এসে ধীরে বসে মোর জানালায়।

লিওনিদ্ কিসেলিওভ্

Заспівайте, сестро, заспівайте
Про своє кохання безталанне,
Бо в піснях кохання нещасливе —
Нащо і співать, як не журна?
В хаті тепло, а на дворі зимно,
За вікном засніжене обійстя,
За обійстям всніжена долина,
А за нею — безпритульний світ.
Як ви скоро, сестро, одіснились
І пішли у сніг, у біле поле,
А в піснях кохання нещасливе,
Нащо і співать, як не журна.
Заспівайте, сестро, про кохання.

Леонід Кисельов
[1968]

গাও দিদি, গাও গান, দিয়ে মন দিয়ে প্রাণ
আপন অকুন্ঠ অতৃপ্ত হৃদয়ের গান,
ভালবাসার ঐ গানে বেদনার কান্না ঝরে
নেই ছোঁওয়া বেদনার, সে কী আর গান?
উষ্ণ ঘরের হৃদয়, শীত-শীতল আঙিনা,
জানালার বাইরে তুম্বারের আবেষ্টন,
সেই আবেষ্টন পেরিয়ে হিমাবৃত প্রান্তর;
তারও ওপারে --- অসীম বিশ্ব অপার।
অকালে গেলে চলে, দিদি, নিলে নির্বাসন
ঐ তুম্বারে, ঐ শ্বেত শুভ্র মাঠের জঠরে,
ভালোবাসার ঐ গানে বেদনার কান্না ঝরে,
নেই ছোঁওয়া বেদনার, সে কি আর গান?
গাও দিদি, গান, তোমার ভালবাসার গান।

লিওনিদ্ কিসেলিওভ্

І мати молода, і сонце юне,
І в неї на колінах немовля.
В прозорому повітрі, наче струни,
Гудіння оксамитного джмеля.

Прислухаюсь — співає колискову,
Не знати, чи дитині, чи собі...
І мати молода, і юне Слово,
І яблуні у ранішній журбі.

Розумні і дурні, малі й великі,
Уславлені й забуті — все пройшло,
Та не було народів без'язиких,
Ще німих народів не було!

Леонід Кисельов
[1968]

কচি বয়স মায়ের, তায় কচি রবির কিরণ,
কোলের উপর শুয়ে নবজাতক অবলা।
স্বচ্ছ হাওয়ায় বাজে যেন তারের বানন্ঝান,
মৃদুস্বরে মধুমাছির একটানা সুর তোলা।

কানটি পেতে শুনি --- ও গায় ঘুম-পাড়ানি গান,
জানতে নারি, শিশুর তরে, নয়ত নিজেৰ তরে
কচি বয়স মায়ের, তায় কচি ঐ যে বাণী,
শুধু আপেল গাছে বিগত বেদনা সঞ্চারে।

ধূর্ত কিংবা মূৰ্খ নয়ত ক্ষুদ্র কিংবা মহান,
খ্যাত কিংবা বিস্মৃত --- এল কত হ'ল লীন,
ছিল নাকো এদের মাঝে জাতি জিহ্বাবিহীন,
আজ অবধি নেই কোন জাতি মূক ভাষ্যহীন!

লিওনিদ্ কিসেলিওভ্

সোফিয়া ময়দান্‌স্কা (Sofiya Maidanska) জন্ম

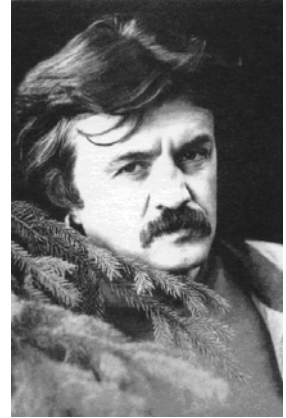
১৯৪৮ সালে রাশিয়ার শ্বেডলভ্‌স্ক অঞ্চলে, তাঁর বাবা-মা তখন সেখানে অন্তরীন। পরে তাঁরা ফিরে আসেন মাতৃভূমিতে, দক্ষিণ-পশ্চিম ইউক্রেনের বুকোভিনা জেলায়, ১৯৩৯ পর্যন্ত ছিল রুমানিয়ার শাসনে, তার আগে, অস্ট্রো-হাঙ্গেরীর অধীনে।

জীবনের শৈশব থেকেই আঞ্চলিক প্রভাব, সঙ্গীতে বিশেষ উৎসাহ, পরবর্তী জীবনে কনসার্ভেটরিতে বেহালা বাজানো শিখে তিনি উচ্চাঙ্গ সঙ্গীতের অধ্যাপিকা ছিলেন। কবিতায় প্রাচ্য-পাশ্চাত্যের গাথা, প্রকৃতির উপর মানুষের অত্যাচারে সামঞ্জস্য-ভঙ্গ, সাবলীলতা ও ক্ষুদ্রতায় মহত্ব খুঁজে পাওয়া ইত্যাদির চিহ্ন। কবিগুরু রবীন্দ্রনাথের বিশেষ সমাদর করেন ও ইউক্রেনে তাঁর রচিত গান ও অনুষ্ঠানের রূপায়নে সক্রিয় ভূমিকা গ্রহণ করে থাকেন।



ভাসিল্ হেরাসিম্যুক (Vasyl Herasymiuk) জন্ম

১৯৫৬ সালে কাজাখস্তানে। পিতামাতার নির্বাসন কালে। ৫০-র দশকে পশ্চিম ইউক্রেনে ফেরত আসেন তাঁরা। হুংসুল জাতির মানুষ হেরাসিম্যুকের কবিতায় সেগেই পরদর্শনভের বিখ্যাত চলচ্চিত্র বিস্মৃত পূর্বপুরুষদের ছায়া'র মত, বর্ণাঢ্য ও প্রাচীন খ্রীষ্টপূর্ব যুগের হুংসুল সংস্কৃতির, রূপকথা ও লোকসাহিত্যের ছোঁয়া। কার্পাথীয়ান পাহাড়, পাইন



বন, দূরন্ত ঝর্ণা ইত্যাদি কবির মনে আলোড়ন জাগায়। হুংসুল লোকাচারের অতীন্দ্রিয় অলৌকিকতার প্রভাব কবির আধ্যাত্মিকতা নিয়ে লেখার উপর। সংকলনের অন্তর্ভুক্ত কবিতা 'দেবালয়ে' কবির বিশেষ নিবেদন - যোর নাস্তিক রাষ্ট্রে ধর্মনিন্দার গৌড়ামি আজ অতীত হয়েছে, তবে বার্ষিক লোক-দেখানো ধর্মের গৌড়ামি এখনো সর্পিল চৌকাঠের মত মানুষকে আটক রেখেছে।

Біляться дні
льняні...
мені на сорочку,
тобі на рушники,
весні на цвіт,
лелеці на крила,
дитині на молоко,
землі на силу,
бабусі
на головоньку сиву.

Софія Майданська

দিন বাড়ছে, আলো বেশি পলপল
কোরাপাট করতে ধবল...
মোর তরে বুনতে বসন অমল,
তোমায় দিতে এক 'রুশনিক' রুমাল,
বসন্তেরে দিতে কত ফুলফল,
পাখছানার গজাতে ডানা যুগল,
শিশুর মুখে দিতে দুধ তরল
জমিকে দিতে ফলন শক্তি বল
আর দিদিমাকে
দিতে পাকা চুলের ঢল।

সোফিয়া ময়দান্স্কা

Моя любов
з очима кольору
чекання.
Вона чужа тобі,
як мова ласки.
В ній знемагає поле
зрання.

Шукають снігу
плоть моя і кров,
щоб остудить
багаторічний трунок,
що вихлюпне
з осмолених конов.

Я проклята за плід,
що впав мені
на груди,
він затремтів,
як сонце у воді.
І ти його береш,
і прагнуть його
люди.

Софія Майданська

আমার প্রেমের
চোখে অপেক্ষার
রঙ-বাসন্তী।
আদরের এই ভাষায়
হানো তোমার উপেক্ষা।
তাই প্রকাশে
আসে ক্লান্তি।
হিম বরফের পিপাসায় জ্বলে
মোর রক্ত-মাংসের কায়
যেন সুরক্ষ কার্ঠের পেটি,
তা হতে বহু বছরের
মোহ মদিরা ফোয়ারা
শীতল যাতে হয়।
শাপগ্রস্ত আমি,
কেন ফলটি এসে প'ড়ে
আমারই বুকের 'পরে
উঠল নেচে কেঁপে,
জলে রবির ছায়া যেমন।
তুমি তারে তখন বেশ হাতে নাও,
চায় তারে তখন
অন্য মানুষজন।

সোফিয়া ময়দান্‌স্কা

У храмі

Ти, вигнана Богом,

питаєшся в Нього:

Не каже, для кого.

ти вигнана Богом.

змю під порогом.

стоїш при свічі
на чорній землі,

для кого мечі
кують ковалі?

У чорні ліси,
на гори й степи

Свічу погаси
і переступи

Василь Герасим'юк

দেবালয়ে ---

তুমি, ঈশ্বর-নির্বাসিত ।

দীপ সমুখে দাঁড়িয়ে
আঁধার মাটির 'পর দিয়ে

তঁাকে কর প্রশ্ন তব:

কার তরে কামার
গড়ে এ তলোয়ার ?

তিনি দেন না জবাব ।

কালো বনের গহনে
স্তম্ভেপ পাহাড় নিজনে

তুমি, ঈশ্বর-নির্বাসিত ।

প্রদীপ নেভাও
আর পেরিয়ে যাও

সর্পির্ল চৌকাঠ এ অতীত ।

ভাসিল্ হেরাসিম্যুক্

Польова криничка

Глибока –
Як час опівночі.
Можеш її скаламутити,
А потім чекати,
Доки знову просвітліє.
Можеш довго дивитися
їй у вічі
і бачити тільки себе.

Софія Майданська

মেঠো কুয়ো

গভীর -
যেন প্রহর মাঝ রাত ।
যেঁটে জল ঘোলা করে
অপেক্ষা, কখন হবে
স্থির আয়না যেন নির্মল সকাল ।
একটানা তাকিয়ে
দীর্ঘ চোখাচোখি
নিজেকেই শুধু দেখি ।

সোফিয়া ময়দানস্কা

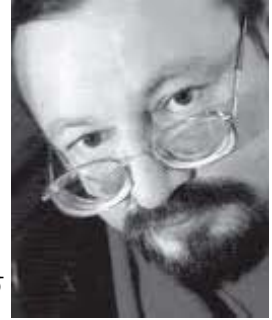
১৯৯২ সালে ইউক্রেনের শিশু-সাহিত্য প্রকাশন সংস্থা 'আ-বা-বা-গা-লা-মা-গা' র স্থাপক ও প্রধান প্রকাশক হিসাবে আজ জনপ্রিয় **ইভান মালকোভিচ (Ivan Malkovych)**। তার আগে ১৯৮১ সাল থেকে কিয়েভ বিশ্ব-বিদ্যালয়ের ভাষাতত্ত্ব বিভাগের ছাত্র মালকোভিচের কবিতা লেখা শুরু, প্রথম বই প্রকাশ ১৯৮৪ সালে।



১৯৬১ সালে ইভানো-ফ্রাঙ্কোভ্‌স্ক জেলায় জন্ম, স্থানীয় 'হুংসুল' নামক উপজাতির অভিনব নৃত্য সঙ্গীত সমৃদ্ধ সংস্কৃতির প্রভাব এঁর লেখায়। কৈশোরেই মালকোভিচ বেহালা বাদনে পারদর্শী, তাঁর অনেক কবিতা সুর দিয়ে গান হয়ে আছে।

ইহর রিমারুক (১৯৫৮-২০০৮) Ihor Rymaruk

উত্তর-পশ্চিম ইউক্রেনের ভলিন জেলায় জন্ম। কিয়েভ বিশ্ববিদ্যালয়ে পড়াশোনা করে ইউক্রেনের প্রকাশন সংস্থা দ্বীপ্রো-তে কাজ করতেন। ২০০৮ সালে ল্ভোভ শহরে হঠাত্‌ গাড়ী চাপা পড়ে আহত



হয়ে মারা যান। ১৯৮০-র দশকের প্রতিবাদের প্রজন্মের কবি রিমারুক। প্রতি কবিতায় প্রতিবাদ ও নতুন শব্দ সৃষ্টি থেকে কবিতার আকার নিয়েও পরীক্ষা নিরীক্ষা। মানুষ হিসাবে ছিলেন শান্ত, জনপ্রিয়তা থেকে দূরে থাকার চেষ্টা করতেন। প্রথম দিকের কবিতায় মডার্নিজমের প্রভাব থাকলেও বিনা দ্বিধায় বলা যায়, যে রিমারুক আধুনিক ইউক্রেনীয় কবিতায় পোস্ট-মডার্নিজমের অন্যতম কর্ণধার।

Ти знов призначив зустріч...

Ти знову призначив зустріч... і не
встиг:
роки перемело як залізниці,
чи снилися дороги вищі...
Сни ці
не варті, певно, радощів простих –
не варті ані пташки на плечі,
ні учти.
після виграного бою,
ні тих замків, з яких
самі собою –
З таких надійних! –
проросли ключі, -
але – не встиг...
І – ніби жартома –
говориш:
Зачекай коли для стрічі
вологу шпарку в мерзлому сторіччі
продихають легкі вуста письма.

Ігор Римарук

আবার দেখা হওয়ার দিলে প্রতিশ্রুতি --- রাখলে না
কথা :
বছর ঘুরল রেলের লাইন ধ'রে
স্বপ্নে দেখা রাস্তা থাকে অনেক উপরে
এই সব স্বপ্নের
দাম নেই, সাবলীল, আনন্দ শুধু সার ---
দাম নেই, যেন কাঁধে বসা পাখী,
হয়নি ভূষিত পুরস্কারে
রণবিজয়ের পরে জানি ;
নয় সেই বন্ধ তালা, যা হ'তে
আপনা - আপনি ---
নির্ভর - যোগ্য ঐ তালা হ'তে ! ---
চাবিগাছা জন্মায়, ---
তবুও --- পৌঁছালে না
আর --- বিদ্রূপের মত ---
তুমি বল :
সবুর কর যখন মিলনের তরে
নৃশংস শতাব্দী শেষের সন্ধিক্ষণে রসের জোয়ারে
লঘু আবেশে কবির ঠোঁটে শ্বাস বইবে শব্দাতীত ।

ইহরু রিমারুক্

Зустрічають. Питають...

Зустрічають. Питають...

ну як ти? ну де ти? ну з ким ти?...

І – почути бояться

Тому – про своє чимскоріш.

Давлять руки на плечі,

немовби

камінні,

а «скиньте»!

не промовиш...

І посмішку ліпиш...

Отак і стоїш,

Як стоять, осипаючись, дні

вересневі.

Зимові ж –

ті, що слід прокладуть,

що розбудять –

далеко вони...

І – «нормально – промовиш.

І зліпиш.

І каву замовиш.

(О, як друг обнімає! –

на знімку старім,

восені...)

দেখা হয়। প্রশ্ন করে :

আরে আছ কেমন ? থাক কোথায় ? কারই বা
সাথে ?.....

আর --- উত্তর শুনতে ভয়

তাই --- নিজের কথা শোনাতে ব্যস্ত।

কাঁধের উপর শক্ত হাতের ভার,

যেন

পাথরযুগের বোঝা,

তবু "হাতটা সরান"!

বলতে বাধা

মুখে হাসি টেনে রাখা

ঐভাবেই দাঁড়িয়ে থাক স্থির,

স্ববির যেমন ঝরাপাতার কার্তিকের দিনগুলি।

শীতের দিন ---

যারা বরফী দাগ যায় ঐকে

--- তারা শিহর জাগায়

ওরা এখনও অনেক দূরে

তাই --- তোমার --- "ঠিক আছে" --- বলা,

তাই --- মুখে হাসি টেনে ভোলা,

তাই --- কফির অর্ডার - হাঁক তোলা।

হায়, বন্ধুর সে আলিঙ্গন! ---

У розмову пірнаєш.
Зусібич ворущаться губи,
листя, -
ніби між риб...
(Далі? Байдуже. Може, у «скло»...)
Знову – руки важкі.
Але як до зими перебув би,
як би й цих
не було?

Ігор Римарук

Знак

Сто світів облітав як один,
Сто плечей закривавив об небо,
впав в темні обійми ожин,
як покликкала мати до себе,-

та коли до земного єства
притулив набубнявіле тіло,
гострим пальцем вказала трава
на високе багряне світило.

Ігор Римарук

পুরানো ছবিতে স্মৃতি, কোন হেমন্তের)

কথা সাগরে দাও ডুব।

সর্বত্র নড়ছে ঠোঁট, বাদানুবাদ,

যেন পাতার রাশি,

বা জলের গভীরে মাছেদের মাঝে কথা

(আরও দূরে ? কি আর হবে। হয়ত সবই

"কাঁচে" মোড়া ঐ কফির দোকান)

আবার --- হাত দুটি ভারী।

যায় কি শীত পর্যন্ত কাল-যাপন,

যদি না থাকত এই সন্ধিক্ষণ?

ইহর্ রিমারুক্

সঙ্কেত

এক আলোর জনম শতেক জ্যোতির মিলনে,

শতেক কাঁধের স্তম্ভে পাহাড় আকাশ চাকে,

কালোজামের বীজের মত আঁধার আলিঙ্গনে,

ফিরে গেছে জঠরে যেন মায়ের পিছুডাকে ---

লুপ্ত হয়ে, বিলীন হয় ক্ষিতির সাথে যবে

দক্ষ, ক্ষত, কালের প্রলয়ে ভগ্ন এ কায়বর

তুলে ধরে উর্ধ্বপানে ঘাসের আঙুল তবে

আলোর পানে রক্তাভ ঐ নীল বেদনার 'পর।

ইহর্ রিমারুক্

Пісенька про черешню

На черешні, що зрубана
й спалена давно,
малий хлопчик до стовбура
прихилив чоло.
Якщо добре придивиться —
можете уздріть
на сорочці проти серця
черешеньки слід.

Сорочечка білесенька,
а личко, як без:
не бий, мамо, телесика —
цей слід відпереш.
Не бий, мамо, бо уранці
за тринадцять літ
ще раз буде на кошульці
від кісточки слід.

চেৰী ফলের গান

পোড়া কাটা চেৰী গাছটা
রয়েছে অনেক কাল,
ঐ ছোট্ট ছেলেটা
তার কাণে ঠেকায় কপাল।
তার জামার বুকে হায় -
হঠাত্ নজরে আসে
ঠিক যেথা হৃদয় সেথায়
চেৰীৰ রক্ত চিহ্ন ভাসে।

জামা সাদা ধবধবে, ওরে,
মুখ ফ্যাকসা, রং গেছে উবে :
মেরো না মা, বালকেরে -
ও দাগ ধুয়ে নেবে।
মেরো না মা, এক সকালে কোন
বছর তেরো হলে উত্তীর্ণ
লাগবে জামায় তখন
এই বীজের মতই রক্ত চিহ্ন।

Ой та кісточка просвердлить
сорочку тонку,
ввійде вона у серденько,
як в черешеньку...
Хтось там сивий до стовбура
притулить чоло,
до черешні, що зрубана
й спалена давно.

Іван Малкович
[11 грудня 1981]

সে বীজ অন্য, করে ভেদ
স্বচ্ছ জামার আড়াল
হৃদয়ে করে যে প্রবেশ
যেন চেরী ফল ...
তখন পঙ্ককেশ কোন মাথা
কাণ্ডে হেলাবে কপাল,
চেরী গাছে, ঐ পোড়া কাটা
যা রয়েছে অনেক কাল।

ইভান মালকোভিচ

[১১ ডিসেম্বর, ১৯৮১]

Музика, що пішла

Коли вона плелася в коси —
чом, скрипко, відвернулась пріч?
Як музику пустила босу
в таку непевну, звабну ніч?
Ох, смиче, теж дививсь куди ти? —
вже ж сивина спадає з пліч, —
як босу музику пустити
в таку непевну, звабну ніч?..
Візьму собі землі окраєць,
піду блукати по світах, —
хай тільки вітер завиває
в моїх розхристаних слідах...
О мамо, тату, як питають,
куди ваш син подався з віч —
скажіть: він музику шукає,
що босою пішла у ніч.

Іван Малкович
[1980, осінь]

যে সুর গেছে চলে

যখন সে বেণী-বেঁধে তৈরী -

বেহালা, কেন ফিরিয়ে মুখ চাওনি আঁখিপাতে?

কেমনে সুরকে ছেড়ে দিলে খালি পায়ে

যেতে ঐ দ্বিধাভরা মায়াবী রাতে?

ওহে, বেহালার ছড়ি, ছিলে কোথা তুমি?-

পাকা চুলের ঢাল নামে যে কাঁধ বেয়ে,-

কেমনে যেতে দিলে সুরকে খালি পায়ে

অমন দ্বিধাভরা মায়াবী রাতে?...

নিয়ে এক মুঠো জমি

ভ্রমি বিশ্বের অলি গলি, -

শুধু ওড়ে ঘুর্ণি হাওয়ায়

মোর নগ্ন উচ্ছংখল পথধূলি...

মাগো, তাত, যদি করে জিজ্ঞাসা

গেল কোথা পুত্র চোখের আড়ালে -

বোলো: গেছে সেই সুরের সন্ধানে,

যে গেল খালি পায়ে রাতে চ'লে।

ইভান মালকোভিচ

[১৯৮০, হেমন্তকাল]

অনুবাদিকার সংযোজন

সত্তর-আশির দশকে সোভিয়েত ইউনিয়ন বা পূর্ব ইউরোপ মানেই বিপ্লবের, দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধের ও ঠাণ্ডা লড়াইয়ের নানা রুদ্ধশ্বাস কাহিনী মনে হত, তার সঙ্গে বাজারে থাকত রুশ ও সোভিয়েত সাহিত্যের বাংলা অনুবাদে সুলভ দামের সুন্দর ছাপা ও বাঁধাই-করা প্রচুর বই। বিগত দুই দশকে এই বইয়ের ভাণ্ডার কমে প্রায় শূন্যে পরিণত হয়েছে। তাই পূর্ব ইউরোপ ও সোভিয়েত ইউনিয়নের নাটকীয় দিনবদলের গল্প, সাহিত্য-সংস্কৃতি নয়, ক্ষমতাবদল ও অর্থের পুনর্বণ্টন, হঠাৎ আসা বৈষম্য, দৈন্য ও প্রাচুর্য্যকে কেন্দ্র করে সাদা-কালো কাহিনীর মধ্যে দিয়ে হয়েছে। তার বেশীর ভাগই আবার বিশ্বায়ণে ডোবা, বাণিজ্যিক স্বার্থে ও উত্তেজনায় মেতে ওঠা সংবাদ মাধ্যমগুলির সৌজন্যে। শুধু রাজনীতি নয়, ইতিহাস রচনায় সাহিত্য ও সংস্কৃতির ভূমিকা সম্বন্ধে গত ২৫ বছরের সোভিয়েত রাষ্ট্র ও পূর্ব ইউরোপের বিভিন্ন দেশে দীর্ঘ অবস্থানের ফলে আমার কিছু অভিজ্ঞতা হয়েছে। আন্তর্জাতিক উন্নয়ন, বৈদেশিক নীতির বিশ্লেষণ ও তার সঙ্গে সাংবাদিকতার কাজে নিযুক্ত থাকায় শুধু রথী-মহারথীদের সঙ্গে কথা বলা ছাড়াও সাধারণ মানুষের সঙ্গে মিশে দেখেছি, যে প্রতিটি সমস্যার সমাধানের চাবিকাঠি আছে সংস্কৃতির গভীরে - বুদ্ধিজীবী, কবি, শিল্পী ও সাহিত্যিক মহলের অপূর্ব জগতে। ক্ষমতা বদলের পর পৃথিবীর এই অঞ্চলে ইতিহাসের উপর ঘন ঘন অস্ত্রোপচারের কথা কে না জানে? কবিদের সৃষ্টি এর উর্দে। অর্থের পুনর্বণ্টনে বঞ্চিত হলেও কবিরাই সব যুগে সামাজিক ও রাজনৈতিক পরিবর্তনের কর্ণধার। ভাষার ব্যবধান কাটিয়ে এঁদের সঙ্গে মেলামেশার সুযোগে আমি ধন্য। তাই গত ২০ বছর ধরে সম্ভব হয়েছে রুশ, পোলিশ, ইউক্রেনীয়, বুলগেরিয়ান, স্লোভাক ভাষা থেকে কবিতা ও রচনার ভাবানুবাদ করা। বাংলা ও ভারতীয় সাহিত্যে এঁদের আগ্রহ, বিশেষ করে রবীন্দ্রনাথের প্রতি গভীর শ্রদ্ধা দেখে কবিগুরুর কিছু রচনা ও ভারতের প্রাক্তন রাষ্ট্রপতি আবদুল কালামের বই ইউক্রেনীয় ভাষায় অনুবাদ করেছি। তখনি উপলব্ধি করেছি যে, ইউক্রেনের মধুর ভাষার সঙ্গে আমাদের

পাঠকদের নতুন সংলাপের বেশ প্রয়োজন। কবিবন্ধুরাও বললেন - দুই যুগ ভিন্দেশে থেকে প্রবাসের নিবন্ধ না লিখে কবিতার সংকলন দিয়ে ইউক্রেনের ইতিহাসের আলপনা আঁকো। অনুবাদ সাহিত্যের বিশ্বব্যাপী নিয়ম অনুসারে ইতিহাসের এই আলপনায় বিভিন্ন শতাব্দীর কবিতার অনুবাদে যুগোপযোগী বাংলা ব্যবহৃত হয়েছে, তাই অনভ্যস্ত পাঠকের কাছে কিছু কবিতা সেকেলে মনে হতে পারে।

বাবা-মাকে নিয়মিত কবিতা পাঠিয়ে মাসের পর মাস বাংলা না বলেও ভাষাকে বাঁচিয়ে রাখার প্রচেষ্টা প্রমাণ করতাম। এই সংকলনের প্রতিটি কবিতার অনুবাদ কবিদের উপহার দিয়েছি, যাঁরা আজ নেই তাঁদের সংগ্রহশালা বা আত্মীয়দের কাছে পৌঁছে দিয়েছি বাংলা অনুবাদ। কোনদিন প্রকাশ করার কথা সত্যি ভাবিনি। প্রথম প্রেরণা দেয় আমার প্রিয় ভাই বিবেকানন্দ, যার উপদেশ ও প্রতিপদে সক্রিয় সাহায্য ছাড়া এই সংকলন প্রকাশিত হত না। কবিদের সঙ্গে তাঁদের জীবনী ও সৃষ্টি নিয়ে নিয়মিত আলোচনা ছাড়া কিছু ভাষাবিদ বন্ধুরা খুব সাহায্য করেছেন। ভ্ৰমসম্বিত প্রকাশনার অধ্যক্ষ ড: ইউরী মীকীতেঙ্কো, ভিতালি কনোনোভ, ড: ওলেনা স্মীর, পিটার স্মীলস্কি, পূর্ব ইউরোপ উন্নয়ন সংস্থা, কিয়েভের 'টেগোর সেন্টার' তার মধ্যে অন্যতম। এছাড়া কবিবন্ধু মৃগাল, কবিতাপ্রেমী শৈবাল, রঙ্গন ও কল্লোলের মত অনেকে পাণ্ডুলিপির মূল্যায়ন করেছেন। কলকাতায় প্রকাশনার সময়ে অনেক প্রতিকূল পরিস্থিতিকে অতিক্রম করতে সহায়তা করেছেন শশধর প্রকাশনীর অধিকারী শ্রী অমিয় বন্দ্যোপাধ্যায়, কৌশিক ও দীপা মজুমদার ও সোমনাথ চট্টোপাধ্যায়। এঁদের সকলকে আমার আন্তরিক ধন্যবাদ ও কৃতজ্ঞতা জানাই। বাংলায় ইউক্রেনীয় কবিতার এই প্রথম সংকলনের ক্ষুদ্র প্রচেষ্টায় ত্রুটি থাকতে পারে। তার মার্জনা ছাড়াও পাঠকদের কাছে একান্ত অনুরোধ, আধুনিক যোগাযোগ মাধ্যম ই-মেল-এ মতামত পাঠান - mridulaghosh1@gmail.com

মৃদুলা ঘোষ

১৪১৭ সন

Українська поезія розширює межі цивілізацій

Стосунки українського журналу іноземної літератури „Всесвіт” з Індією – особлива прикмета нашого часопису і Видавничого дому „Всесвіт”. Без перебільшення, ґрунтовному діалогу української та індійської культур упродовж останніх 50-ти років слід завдячувати саме „Всесвітові”, про що промовляють сухі цифри: за цей час журнал запропонував читачам понад 80 публікацій творів індійської літератури, а 8 окремих публікацій – то твори великого бенгальця Рабіндраната Тагора. Особлива наша гордість – спеціальний, повністю присвячений індійській культурі й літературі номер, який вийшов у 1976 році і який високо оцінила велика Індія Ганді.

Зрозуміло, до набуття незалежності України у 1991 році, в Індії не могло бути такого потужного процесу навізаєм, хоча й тоді мовами народів Індії прозвучала знаменита поема „Катерина” найбільшого українського поета Тараса Шевченка, яка перекладалася за підрядниками.

На відміну від тих часів, першим повівом *НОВОЧАСНИХ* українсько-індійських літературних зв’язків стає антологія „Україна альпона”, що її підготувала доктор Мрідула Гош – щирий друг нашої країни, знаний політолог, культуролог і людина з унікальним мовним чуттям. Це знакове видання провіщає добу прямого, віч-у-віч діалогу двох дружніх культур і країн, діалогу без посередників і політичних тлумачів. Уперше українська поезія звучатиме у прямому, з мови оригіналу на мову бенгалі перекладі.

Це особливо важливо, зважаючи на 200 мільйонів людей у світі, що є носіями бенгальської мови: в самій Індії, у Бангладеш, численній діаспорі. В Індії багато дивовиж, але найбільша та, що там насправді люблять, читають і купують поетичні книжки. Поезія невмируща, бо з неї постала людська особистість, і саме в ній найвиразніше окреслюється сутність людини – совість.

Юрій Микитенко,
доктор філософії, головний редактор журналу „Всесвіт”

ইউক্রেনীয় প্রকাশকের নিবেদন

Ukrainian poetry widens its horizons

Relations with India are something special for the Ukrainian journal of foreign literature Vsesvit. Without exaggeration, the list of Vsesvit's publications bears witness to an intimate dialogue between the Indian and Ukrainian cultures over the past 50 years: more than 80 titles of Indian literature and 8 separate volumes - including the works of the great poet Rabindranath Tagore. We are particularly proud that a special issue on Indian culture and literature, released in 1976, was greeted with praise by none other than Mrs. Indira Gandhi.

It is quite understandable that there was not much interest in Ukrainian literature in India prior to 1991, the year in which Ukraine became independent. Even back then, however, our greatest poet, Taras Shevchenko's famous poem "Kateryna" had been translated into several Indian languages, but through the medium of other languages.

This anthology - "Ukraina Alpona" - is therefore the first attempt to develop a direct Ukrainian-Indian literary connection, thanks to Dr. Mridula Ghosh, a well known political scientist, expert on culture and a sincere friend of Ukraine with a unique sense of its language. Without intermediaries and political interpreters, this notable publication is a milestone for the beginning of a direct, face-to-face dialog between the cultures of two friendly countries. For the first time Ukrainian poetry will be read in Bengali, translated directly from the original Ukrainian texts.

This is especially important, given the high esteem in which poetry in general is held in India, and the fact that 200 million people throughout the world are native speakers of Bengali - in India, Bangladesh, and in the Diaspora. Poetry never dies; it brings out the immortal soul and what is innate in all human beings - the conscience.

Dr. Yuriy Mykytenko
Chief Editor, VSESVIT

পরিশিষ্ট (সংকলনে ব্যবহৃত কিছু বিদেশী নাম ও শব্দের টীকা)

স্টেপ - রাশিয়া, ইউক্রেন ও পূর্ব ইউরোপে শুষ্ক, তৃণাবৃত, নিষ্পাদপ প্রান্তর।

সিয়ান - ইউক্রেন ও পোল্যান্ডের সীমান্তে ভিস্লা নদীর দীর্ঘতম উপনদী।

ডন - রাশিয়ার দ্বিতীয় বৃহত্তম নদী, রাশিয়ার পূর্বাঞ্চলে, ইউক্রেনের সীমান্ত থেকে কিছু দূরে আজভ সাগরে পড়েছে।

দ্বীপার - ইউক্রেনের বৃহত্তম নদী, রাশিয়া থেকে উৎপত্তি হয়ে বেলারুসের কিছু অংশে প্রবাহিত হয়ে ইউক্রেনের মধ্যে দিয়ে বয়ে কৃষ্ণ সাগরে পড়েছে।

কার্পাথ - ইউক্রেনের পশ্চিমে, স্লোভাকিয়া, হাঙ্গেরী ও রুম্যানিয়ার সীমান্তে অবস্থিত পর্বতমালা (ইংরাজীতে কার্পেথিয়ান)

কালিনা - ঘন লাল রঙের ছোট কুলজাতীয় ফল (*Viburnum opulus*)

ফেল্লাহ - মিশর দেশে আরবী ভাষায় রাজমিস্ত্রী

ইভান, পেত্রো - যে কোন লোক, (বাংলায় যেমন রাম, শ্যাম, যদু, মধু)

সিসেরো (Cicero) জন্ম খ্রীষ্টপূর্ব ১০৬, মৃত্যু ৪৩, রোমান দার্শনিক, রাজনীতিবিদ, বক্তা।

তর্কেমাদা (Tomas de Torquemada) (১৪২০-১৪৯৮) মধ্যযুগে স্পেনের ইন্কুইজিশনের নেতা। নির্মমতা ও সন্ত্রাসের সাহায্যে ১৪৯২তে ব্যাপকভাবে ইহুদীদের স্পেন থেকে তাড়নায় ও হাজার লোকের হত্যার জন্য কুখ্যাত।

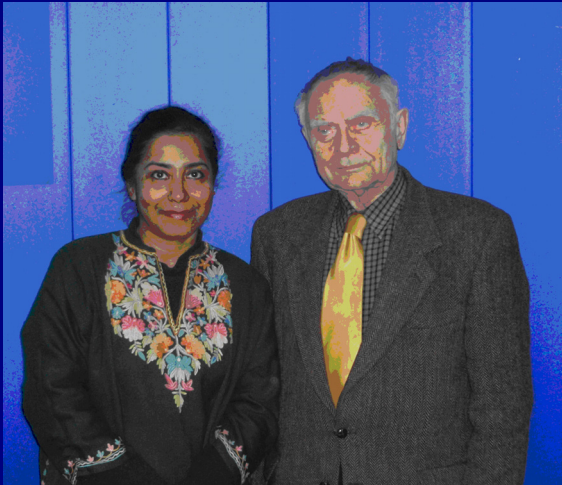
পলেস - উত্তর ইউক্রেনের বনে সমৃদ্ধ অঞ্চল, প্রাচীন স্নাভ সভ্যতার পীঠস্থান।

পদিল - দক্ষিণ-পশ্চিম ইউক্রেনের উর্বর সমভূমি, দ্বীপ্টার ও দক্ষিণ বুগ নদীর মধ্যস্থল।

চেরীমোশা - কার্পাথ পাহাড়ের মধ্যে ৮০ কিলোমিটার দীর্ঘ নদী

পোচাইনা - দ্বীপারের একটি শাখানদী, এখন শুকিয়ে ছোট হুদে ও জলাশয়ে পরিণত হয়েছে। ৯৮৮ সালে এর জলেই ব্যাপ্টিজম করে খ্রীষ্টধর্মে দীক্ষিত হত সকলে।

রুশনিক্ - ইউক্রেনের লোকাচারে ও শিল্পে ব্যবহৃত লাল ও কালো রঙের (অনেক সময় নানা রঙে) সূক্ষ্ম সেলাইয়ের কাজ করা বিখ্যাত সাদা চাদর, রুমাল বা আবরণ, যা দিয়ে জন্ম, মৃত্যু, বিবাহ ও অন্যান্য দৈনিক আচার পালিত হয়।



I have before me the table of contents of the first anthology of Ukrainian poetry in the Bengali language. This collection was selected and translated by a writer and researcher with a profound knowledge and understanding of the Ukrainian language - Ms. Mridula Ghosh, an Indian national and Bengali by birth.

The unique, thousand year old, and spiritually rich and diverse poetic culture of India is quite well known in Ukraine, thanks to the universalism of the Ukrainian poet Ivan Franko and the tireless efforts of several translators of literary works written in the various languages of India. However, a serious interest in Ukrainian literature in India has yet to emerge, no doubt due to the fact that Ukraine only recently achieved its independence. In a similar vein, Indian culture was also not so widely known in the colonial period before independence.

Ms. Ghosh is profoundly familiar with the patriotic and state building mission of Ukrainian poetry, which she introduces to the Indian reader.

As the first appearance of the Ukrainian nation in India, her anthology - "Ukraina alpona" or "Ukrainian patterns" - deserves the highest of praise. Although it does not include all of the famous names in Ukrainian poetry - after all, this is only a first 'acquaintance' - no one in this collection is 'second-string' or superfluous. Also worthy of note is the care Ms. Ghosh has taken to avoid repetition in showing the vibrant philosophical and lyrical diversity of motive, and in concentrating on works that celebrate the spirit and universal humanist attributes of Ukrainian poetry.

Ms. Ghosh has indeed made a very significant contribution to independent Ukraine.

Finally, this collection has been blessed with its publication taking place in the year marking the 150th anniversary of the birth of the great Indian poet, Rabindranath Tagore.

-- Dmytro Pavlychko, a famous poet of Ukraine